आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

वर्ष-3, अंक-10 अक्टूबर, 2024

कृत्रिम बुद्धिमत्ता

इस आधुनिक युग में हमारे जीवन के समस्त आयाम कंप्यूटर पर निर्भर करते हैं। कंप्यूटर के बिना जीवन की कल्पना करना लगभग असंभव है। वर्तमान जीवन कंप्यूटर पर पूरी तरह से निर्भर हो चूका है। इसलिए कंप्यूटर को बुद्धिमान बनाना बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है जिससे हमारे जीवन की यात्रा सुगम हो जाए। ''आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस'' (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) कंप्यूटर का सिद्धांत और विकास है, जो मानव बुद्धि और इंद्रियों की नकल करता है, जैसे दृश्य, धारणायें, भाषण पहचान, निर्णय लेना और भाषाओं के मध्य अनुवाद। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने तकनीक की दुनिया में अभूतपूर्व क्रांति ला दी है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मशीनों के पास मौजूद वह बुद्धिमत्ता है जिसके तहत वे मानवीय मदद से विभिन्न कार्यो को कर सकती हैं। इसकी मदद से मशीनें सीख सकेंगी, समस्याओं को सुलझा सकेंगी, कार्ययोजना बना सकेंगी, मानव की तरह सोच सकेंगी आदि। वस्तुतः आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मशीनों द्वारा मानवीय बुद्धिमत्ता का अनुकरण है। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस दिन-प्रतिदिन तेजी से विकास की ओर अग्रसर है, ऐसा माना जा रहा है कि निकट भविष्य में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मानव जीवन को बहुत बड़े पैमाने पर बदलने जा रहा है और संभवतः प्रमुख समस्याओं को सुलझाकर दुनिया के समस्त संकटों को समाप्त कर देगा।

स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में एआई का व्यापक रूप से उपयोग किया जा रहा है। वैज्ञानिक ऐसी तकनीक विकसित करने का प्रयास कर रहे हैं जो रोग निदान के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन की ओर अग्रसर है। एआई बिना किसी मानवीय निगरानी के रोगियों के ऑपरेशन करने में सक्षम होगा, तकनीक पर आधारित सर्जिकल प्रक्रियाएँ पहले से ही विकसित की जा चुकी हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से हमें समय नियोजन में सहयोग प्राप्त होगा, रोबोट के इस्तेमाल से मानव-श्रम में कमी आएगी। उदाहरण के लिए उद्योगों में रोबोट का प्रयोग किया जाता है जिससे अत्याधिक मानव प्रयास व समय की बचत होती है। शिक्षा के क्षेत्र में एआई के बहुत कारगर होने की संभावना है। यह छात्रों को पढ़ाने के नए-नए अवसर प्रदान कर सकता है, जिसकी मदद से छात्र अवधारणाओं को बेहतर तरीके से सीख पाएंगे।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस नवाचार तकनीक का भविष्य है क्योंकि हम इसका इस्तेमाल हम कई क्षेत्रों में कर सकते हैं। उदाहरण के लिए इसका इस्तेमाल सैन्य क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, ऑटोमोबाइल आदि में किया जा सकता है। आगामी वर्षों में हम एआई के और भी अनुप्रयोग देख पाएंगे क्योंकि यह तकनीक दिन-प्रतिदिन विकसित हो रही है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मार्केटर्स (बाज़ार) को सही समय पर जानकारी देने में सक्षम बनाकर उपभोक्ताओं और संभावित ग्राहकों के बारे में गहन जानकारी प्रदान करता है। एआई समाधानों के माध्यम से बाज़ार अपने अभियानों और रणनीतियों को परिष्कृत कर सकते हैं। कृषि क्षेत्र में पौधों में होने वाली बीमारियों, कीटों और पौधों में कुपोषण का पता लगाने के लिए एआई तकनीक का इस्तेमाल किया जा सकता है। एआई की मदद से किसान मौसम की स्थिति, तापमान, जल के उपयोग और मृदा की स्थिति का विश्लेषण कर सकते हैं। बैंकिंग एआई समाधानों के माध्यम से धोखाधड़ी की गतिविधियों का पता लगाया जा सकता है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता जटिल चिकित्सा डेटा के विश्लेषण, निदान और रोग जटिलता में मानव संज्ञान से आगे निकल सकती है।

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस दुनिया का भविष्य होगा। विशेषज्ञों के अनुसार हम स्वयं को इस तकनीक से अलग नहीं कर पाएंगे क्योंकि यह शीघ्र ही हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन जाएगा। इस दुनिया में हमारे जीने के तरीके को बदल देगा। यह तकनीक क्रांतिकारी साबित होगी क्योंकि यह हमारे जीवन को हमेशा के लिए बदल देगी, इसके उपरान्त भी मानवीय संवेदनाएं मशीन से परे होती हैं, हमें तकनीकि विकास और मानवीय संवेदनाओं के बीच सामंजस्य बनाकर अपनी विकास यात्रा जारी रखनी है।

प्रकाशक :

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर, 273007

आरोग्य पथ
मासिक ई-पत्रिका

"दीपावली"

दीपावली का महत्व धार्मिक दृष्टि से अत्यधिक है। इसे भगवान श्रीराम के लंका के राक्षसराज रावण को पराजित कर 14 वर्षो के वनवास के बाद अयोध्या लौटने के दिन के रूप में भी मनाया जाता है। इस दिन अयोध्या ने बेहद खुशी मनाई और दीपों से नगर को रोशन किया। यह इस समय की जीत और अच्छाई के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है। अब प्रश्न यह है किए जब दीपावली भगवान राम के 14 वर्षो के वनवास से अयोध्या लौटने के उत्साह में मनाई जाती है, तो दीपावली पर 'लक्ष्मी पूजन' क्यों होता है।

दीपावली उत्सव दो युग सतयुग और त्रेतायुग से जुड़ा हुआ है। सतयुग में समुद्र मंथन से माता लक्ष्मी उस दिन प्रकट हुई थीं, इसलिए 'लक्ष्मी पूजन' होता है । भगवान श्री राम भी त्रेतायुग मे इसी दिन अयोध्या लौटे थे, तो अयोध्यावासियों ने दीप जलाकर उनका स्वागत किया था, इसलिए इसका नाम दीपावली है। इसलिए इस पर्व के दो नाम हैं, 'लक्ष्मी पूजन' जो सतयुग से जुड़ा है और दुसरा 'दीपावली' जो त्रेतायुग, प्रभु श्री राम और दीपो से जुड़ा है। एक प्रश्न यह भी है कि लक्ष्मी के साथ गणेश जी की पूजा क्यों करते हैं।

वर्णित कथाओ के अनुरूप लक्ष्मी जी जब सागर मन्थन में मिलीं और भगवान विष्णु से विवाह किया, तो उन्हें धान और ऐश्वर्य की देवी बनाया गया, उन्होंने धान को बाँटने के लिए प्रबंधक कुबेर को बनाया। कुबेर कुछ कंजूस वृति के थे। वे धान बाँटते नहीं थे, स्वयं धान के भंडारी बन कर बैठ गए। माता लक्ष्मी परेशान हो गई। उनकी सन्तान को कृपा नहीं मिल रही थी। उन्होंने अपनी व्यथा भगवान विष्णु को बताई। भगवान विष्णु ने उन्हें कहा, कि तुम प्रबंधक बदल लो। माँ लक्ष्मी बोली, यक्षों के राजा कुबेर मेरे परम भक्त हैं। उन्हें बुरा लगेगा। तब भगवान विष्णु ने उन्हें श्री गणेश जी की दीर्घ और विशाल बुद्धि को प्रयोग करने की सलाह दी। माँ लक्ष्मी ने श्री गणेश जी को धान का वितरक बनने को कहा।

श्री गणेश जी ठहरे महा बुद्धिमान, वे बोले माँ मैं जिसका भी नाम बताऊंगा, उस पर आप कृपा कर देना, कोई किंतु, परन्तु नहीं। माँ लक्ष्मी ने हाँ कर दी। अब श्री गणेश जी लोगों के सौभाग्य के विघ्न रुकावट को दूर कर उनके लिए धनागमन के द्वार खोलने लगे। कुबेर भंडारी ही बनकर रह गए। श्री गणेश जी पैसा प्रदान करने वाले बन गए। गणेश जी की दयालुता देख, माँ लक्ष्मी ने अपने मानस पुत्र श्री गणेश को आशीर्वाद दिया, कि जहाँ वे अपने पति नारायण के सँग ना हों, वहाँ उनका पुत्रवत गणेश उनके साथ रहें। दीपावली आती है कार्तिक अमावस्या को। भगवान विष्णु उस समय योगनिद्रा में होते हैं। वे जागते हैं ग्यारह दिन बाद, देव उठावनी एकादशी को। माँ लक्ष्मी को पृथ्वी भ्रमण करने आना होता है, शरद पूर्णिमा से दीवाली के बीच के पन्द्रह दिनों में, तो वे सँग ले आती हैं श्री गणेश जी को। इसलिए दीपावली को लक्ष्मी-गणेश की पूजा होती है। महापुराण में वर्णित कथाओं के अनुसार, मंगल के दाता श्रीगणेश, श्री की दात्री माता लक्ष्मी के दत्तक पुत्र हैं। माता लक्ष्मी ने गणेशजी को वरदान दिया कि जो भी मेरी पूजा के साथ तुम्हारी पूजा नहीं करेगा, लक्ष्मी उसके पास कभी नहीं रहेगी। इसलिए दिवाली पूजन में माता लक्ष्मी के साथ दत्तक पुत्र के रूप में भगवान गणेश की पूजा की जाती है।

प्रकाशक :
महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर
आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर, 273007

आरोग्य पथ
मासिक ई-पत्रिका

हमारी विरासत

महर्षि वराहमिहिर

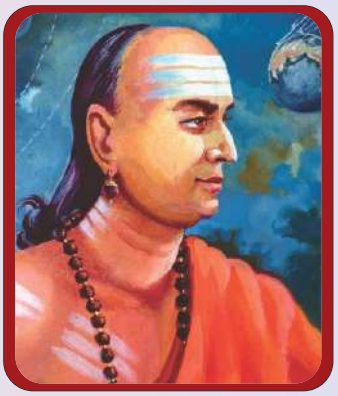

वराहमिहिर का जन्म ईसा के पांचवीं से छठवीं शताब्दी के आसपास हुआ था। आपका जन्म एक ज्योतिषी परिवार में हुआ। यह परिवार उज्जैन में शिप्रा नदी के निकट कपित्थ (कायथा) नामक गांव का निवासी था। उनके पिता आदित्यदास सूर्य भगवान के भक्त थे। उन्हीं ने मिहिर को ज्योतिष विद्या सिखाई। कुसुमपुर (पटना) जाने पर युवा मिहिर महान खगोलज्ञ और गणितज्ञ आर्यभट्ट से मिले। इससे उन्हें इतनी प्रेरणा मिली कि उन्होने ज्योतिष विद्या और खगोल ज्ञान को ही अपने जीवन का ध्येय बना लिया। उस समय उज्जैन विद्या का केंद्र था। गुप्त शासन के अन्तर्गत वहां पर कला, विज्ञान और संस्कृति के अनेक केंद्र पनप रहे थे। वराह मिहिर इस नगर में रहने के लिये आ गये क्योंकि अन्य स्थानों के विद्वान भी यहां एकत्र होते रहते थे। समय आने पर उनके ज्योतिष ज्ञान का पता विक्रमादित्य चन्द्रगुप्त द्वितीय को लगा। राजा ने उन्हें अपने दरबार के नवरत्नों में शामिल कर लिया। मिहिर ने सुदूर देशों की यात्रा की, यहां तक कि वह यूनान तक भी गये। वराहमिहिर वेदों के ज्ञाता थे मगर वह आंखे बंद करके विश्वास नहीं करते थे। उनकी भावना और मनोवृत्ति एक वैज्ञानिक की थी। अपने पूर्ववर्ती वैज्ञनिक आर्यभट्ट की तरह उन्होंने भी कहा कि पृथ्वी गोल है। विज्ञान के इतिहास में वह प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने कहा कि कोई शक्ति ऐसी है जो चीजों को जमीन के साथ चिपकाये रखती है। आज इसी शक्ति को गुरुत्वाकर्षण कहते है। वराहमिहिर ने पर्यावरण विज्ञान, जल विज्ञान, भूविज्ञान के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण टिप्पणियां की। उनका कहना था कि पौधो और दीमक जमीन के नीचे के पानी को चिन्हित करते हैं। आज वैज्ञनिक जगत द्वारा उस पर ध्यान दिया जा रहा है। त्रिकोणमितीय सूत्रों को भी वाराहमिहिर द्वारा प्रतिपादित किया गया। वाराहमिहिर ने आर्यभट्ट प्रथम द्वारा प्रतिपादित ज्या सारणी को और अधिक परिशुद्ध बनाया। आपने शून्य एवं ऋणात्मक संख्याओं के बीजगणितीय गुणों को परिभाषित किया। वराहमिहिर ने वर्तमान समय में पास्कल त्रिकोण के नाम से प्रसिद्ध संख्याओं की खोज की। इनका उपयोग वे द्विपद गुणाकों की गणना के लिये करते थे। बृहत्संहिता में सांयोजिकी से सम्बन्धित यह श्लोक विद्यामान है।

षोडशके द्रव्यगणे चतुर्विकल्पेन भिद्यमानानाम।

अष्टादश जायन्ते शतानि सहितानि विंशत्या॥

अर्थ- सोलह प्रकार के द्रव्य विद्यमान हों तो उनमें से किसी चार को मिलाकर कुल 1820 प्रकार के इत्र बनाए जा सकते हैं।

आधुनिक गणित की भाषा में कहें तो, $16C4 = (16 \times 15 \times 14 \times 13) / (1 \times 2 \times 3 \times 4) = 1,820$

वराहमिहिर का प्रकाशिकी में भी योगदान है। उन्होने कहा है कि परावर्तन कणों के प्रति.प्रकीर्णन से होता है। उन्होने अपवर्तन की भी व्याख्या की है। इन्होंने तीन महत्वपूर्ण पुस्तकें बृहज्जातक, बृहत्संहिता और पंचसिद्धांतिका लिखीं। इन पुस्तकों में त्रिकोणमिति के महत्वपूर्ण सूत्र दिए हुए हैं, जो वराहमिहिर के त्रिकोणमिति ज्ञान के परिचायक हैं। पंचसिद्धांतिका में वराहमिहिर से पूर्व प्रचलित पाँच सिद्धांतों का वर्णन है। ये सिद्धांत हैं - पोलिशसिद्धांत, रोमकसिद्धांत, वसिष्ठसिद्धांत, सूर्यसिद्धांत तथा पितामहसिद्धांत। इन्होंने फलित ज्योतिष के लघुजातक, बृहज्जातक तथा बृहत्संहिता नामक तीन ग्रंथ भी लिखे हैं। बृहत्संहिता में वास्तुविद्या, भवन-निर्माण-कलाए वायुमंडल की प्रकृति, वृक्षायुर्वेद आदि विषय सम्मिलित हैं।

प्रकाशक :
महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर
आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर, 273007

आरोग्य पथ
मासिक ई-पत्रिका

श्रद्धांजलि सभा

सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

पद्मविभूषित रतन टाटा जी को श्रद्धांजलि देते संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय विद्यार्थी

दिनांक 10 अक्टूबर, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर बालापार में पद्मविभूषित रतन टाटा जी को श्रद्धांजलि देकर नमन किया गया।

संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में प्रार्थना सभा में विद्यार्थियों ने दो मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि दिया।

अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने रतन टाटा जी के प्रति भाव अर्पण करते हुए कहा कि रतन टाटा भारतीय उद्योग के एक ऐसे अद्वितीय व्यक्तित्व थे, जिनका नाम सम्मान और प्रेरणा का प्रतीक है। उनका जीवन एक ऐसा प्रेरणास्त्रोत है, जिसने न केवल उद्योग जगत में बल्कि समाज के विभिन्न क्षेत्रों में गहरी छाप छोड़ी है।

उद्योग, चिकित्सा, शिक्षा, विज्ञान के क्षेत्र में उनके किए गए कार्य सभी के लिए प्रेरणादायक है। उनका दृष्टिकोण हमेशा नवाचार और गुणवत्ता पर केंद्रित रहा।

प्रो. सुनील कुमार सिंह ने कहा की रतन टाटा जी का व्यक्तित्व केवल उद्योग तक सीमित नहीं था। वे समाज सेवा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए भी जाने जाते है। उनकी सरलता, समर्पण और सेवा भावना ने उन्हें लोगों के दिलों में एक विशेष स्थान दिलाया है।

आज, जब हम रतन टाटा को श्रद्धांजलि अर्पित कर हैं, तो हमें उनके द्वारा स्थापित सिद्धांतों और मूल्यों को अपनाने का प्रयास करना चाहिए। उनके जीवन की प्रेरणादायक गाथा हमें सिखाती है कि सफलता केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों में नहीं है, बल्कि समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारियों में भी है। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि एक व्यक्ति अपनी मेहनत, ईमानदारी और नैतिकता से किस प्रकार समाज में परिवर्तन ला सकता है।

रतन टाटा का योगदान हमें हमेशा प्रेरित करता रहेगा और उनके सिद्धांतों का पालन करना ही उनकी सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी।

श्रद्धांजलि में प्रमुख रूप से प्रमुख रूप से डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. अमित दुबे, डॉ. धीरेंद्र सिंह, डॉ. प्रेरणा त्रिपाठी, डॉ. किरण कुमार, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, डॉ. अवेधनाथ सिंह, डॉ. अंकिता मिश्रा, डॉ. कीर्ति कुमार यादव, डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव, डॉ. अखिलेश दुबे, श्री धनंजय पांडेय, श्री अनिल कुमार, श्रीमती प्रज्ञा पाण्डेय, श्रीमती रश्मि झा, सृष्टि यदुवंशी, श्री जन्मेजय सोनी, मिताली, श्री अनिल कुमार मिश्रा, श्री अनिल शर्मा सहित सभी विभागों के शिक्षकगण उपस्थित रहें।

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर जागरूक करतीं छात्राएं

गुरू श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग

दिनांक 10 अक्टूबर, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंर्तगत संचालित गुरू श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग में पोस्ट बेसिक बी.एस.सी. नर्सिंग द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत छात्रा (अंकिता शर्मा) ने विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर जागरूकता बढ़ाने के लिए भाषण दिया।

उन्होंने कहा कि 'कार्यस्थल पर मानसिक स्वास्थ्य' 2024 के विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस का मुख्य विषय है जिसमें जागरूकता बढ़ाना तथा मानसिक स्वास्थ्य और कार्य के बीच महत्वपूर्ण संबंध को उजागर करना बताया गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने घोषणा की है कि अकेले अवसाद और चिंता के कारण लगभग 120 अरब लोगों के कार्यदिवस का नुकसान होता है।

अंत में उन्होंने कहा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने तनाव और अवसाद को कम करने के लिए कुछ दिशा–निर्देश दिए हैं जिनमें शामिल हैं (प्रतिदिन कम से कम

6.8 घंटे की नींद, अच्छा भोजन करें अर्थात स्वस्थ और संतुलित आहार लें, अपना पसंदीदा संगीत सुनें, उचित व्यायाम करें, प्रतिदिन लगभग 20.30 मिनट तक नियमित रूप से बाहर टहलें और स्क्रीन टाइम (यानी मोबाइल फोन और लैपटॉप का उपयोग कम करें) ताकि स्वास्थ्य में सुधार हो और विभिन्न सामान्य रूप से होने वाली मानसिक स्वास्थ्य बीमारियों से बचाव हो सकें।

हस्त प्रक्षालन दिवस

गुरू श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग

नर्सिंग कॉलेज में वैश्विक हाथ सफ़ाई दिवस पर विद्यार्थियों को जागरूक किया गया

दिनांक 15 अक्टूबर, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंर्तगत संचालित गुरू श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग में बेसिक बी.एस.सी. नर्सिंग प्रथम वर्ष में अध्ययनरत छात्रा रितिका शर्मा ने वैश्विक हस्त स्वछता दिवस के अवसर पर जागरूकता बढ़ाने के लिए भाषण दिया।

उन्होंने कहा कि वैश्विक हस्त स्वच्छता दिवस दुनिया भर के लोगों को प्रेरित करने और संगठित करने के उद्देश्य से अंतर्राष्ट्रीय हाथ सफ़ाई प्रचार अभियान है।

वैश्विक हस्त स्वच्छता दिवस की शुरुआत 2008 में हुई थी और इसे पहली बार मनाया गया था। यह हमारे जीवन के हर दिन के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह संक्रमण को रोकने के साथ ही साथ कीटाणुओं को फैलने से रोकने में मदद करता है। हमें दैनिक जीवन में खांसने, छींकने, बीमार व्यक्ति की देखभाल करने से पहले और बाद में अपने हाथ साफ करने चाहिए।

अंत में उन्होंने कहा किए यदि किसी व्यक्ति में हाथ धोने की प्रवृति नहीं हैं तो उसके शरीर को मूलतः बैक्टीरिया और वायरस के लिए खुला निमंत्रण है, इसलिए हाथ धोएं, जीवन बचाएं और स्वस्थ रहें।

शैक्षणिक भ्रमण

कृषि संकाय

केन्द्रीय बीज परीक्षण प्रयोगशाला में कृषि संकाय के विद्यार्थियों द्वारा शैक्षणिक भ्रमण

दिनांक 23 अक्टूबर, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित कृषि संकाय के तृतीय वर्ष के छात्रों ने वाराणसी स्थित कृषि क्षेत्र के राष्ट्रीय महत्व के चार प्रमुख संस्थानों. भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान व राष्ट्रीय बीज अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र का दो दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण किया।

छात्रों ने आई.आई.वी.आर. में शाकीय फसलों के अनुवांशिक सुधार, उत्पादन, सुरक्षा व प्रबंधन आदि महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी प्राप्त की व शोध की बारीकियों को समझा।

इरी में विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह ने कृषि को भारतीय अर्थव्यवस्था का रीढ़ बताते हुए कहा कि वर्तमान में विश्व की 60 प्रतिशत धान को किस्में इरी द्वारा विकसित की गई हैं।

विद्यार्थियों ने इरी में उन्नत

प्रयोगशालाएं, अत्याधुनिक फॉर्म मशीनरी, कम्प्यूट्रीकृत जीव विज्ञान प्रयोगशालाएं सहित मृदा परीक्षण प्रयोगशाला का अवलोकन किया व उनके संचालन के विधि को समझा।

विद्यार्थियों ने एन.एस.आर.टी.सी. में बीज स्वास्थ्य परीक्षण, डीएनए फिंगरप्रिंटिंग, बीज संग्रहालय इत्यादि के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

यह शैक्षणिक भ्रमण अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. विमल कुमार दुबे के निर्देशन में डॉ. नवनीत कुमार सिंह, डॉ. सास्वती प्रेमकुमारी, डॉ. डी.आर. भारद्वाज (आईआईवीआर), डॉ. आशीष कुमार श्रीवास्तव (इरी), डॉ. कृति (इरी), डॉ. राहुल (इरी) के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

समझौता ज्ञापन

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

दिनांक 25 अक्टूबर, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर एवं क्वेस्ट इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, मलेशिया ने शैक्षणिक और अनुसंधान क्रियाकलापों को बढ़ावा देने के लिये समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया।

इस ज्ञापन पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल बाजपेई और क्वेस्ट इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी की कुलपति प्रोफेसर ज़ीटा मोहम्मद फ़हमी ने हस्ताक्षर कर दोनों संस्थाओं के बीच सहयोग के प्रमुख क्षेत्रों में कृषि, जैव प्रौद्योगिकी, फार्मा व चिकित्सा में संयुक्त शोध परियोजनाओं पर कार्य के साथ वर्तमान एवं भविष्य की जरूरतों को पूरा करने एवं कौशल बढ़ाने के लिए क्षमता विकास, छात्र, संकाय और तकनीकी विनिमय आदि विषयों पर समझौता करार किया। इसके अतिरिक्त दोनों संस्थानों का लक्ष्य इस सांझेदारी के माध्यम से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में संयुक्त कार्यशाला व विकास परियोजना को विकसित और कार्यान्वित करना है। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल बाजपेई ने संस्थानों के बीच समझौते का स्वागत करते हुए कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित किया है, निश्चय ही इस समझौते से दोनों विश्वविद्यालय शैक्षणिक, अनुसंधान और प्रशिक्षण गतिविधियों के प्रचार– प्रसार को एक नई दिशा देंगे और गोरखनाथ विश्वविद्यालय के छात्रों को शिक्षा के वैश्विक परिवेश को समझने का मौका मिलेगा, जिससे भविष्य में नए नवाचारों से नए आयामों के द्वार खुलेंगे।

क्वेस्ट इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी मलेशिया की कुलपति प्रोफेसर ज़ीटा मोहम्मद फ़हमी ने समझौता पत्र पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि दोनों विश्वविद्यालय ने आज अकादमिक स्तर पर नई शुरुआत किया है, पूर्ण विश्वास है कि अकादमिक गुणवत्ता में दोनों संस्थान एक दूसरे का सहयोग कर शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारों से नया अध्याय लिखेंगे।

कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने समझौता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर छात्रों के व्यक्तित्व विकास, उच्च शिक्षा में अनुसंधान दृष्टि विकसित करने के लिए संकल्पित है और इस समझौते से दोनों पक्षों के विद्यार्थियों को विशेष लाभ मिलेगा।

समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर के समय महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव, समझौता समन्वयक व अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. विमल कुमार दूबे, नर्सिंग प्राचार्य डॉ. डी. एस. अजीथा, प्राचार्य पैरामेडिकल श्री रोहित श्रीवास्तव व फार्मेसी प्राचार्य डॉ. शशिकांत सिंह उपस्थित रहें।

तीन दिवसीय 'हितायु संगोष्ठी'

प्रथम दिवस

उद्घाटन सत्र

गुरु गोरखनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

शोधार्थियों को सम्बोधित करते हुए माननीय कुलपति

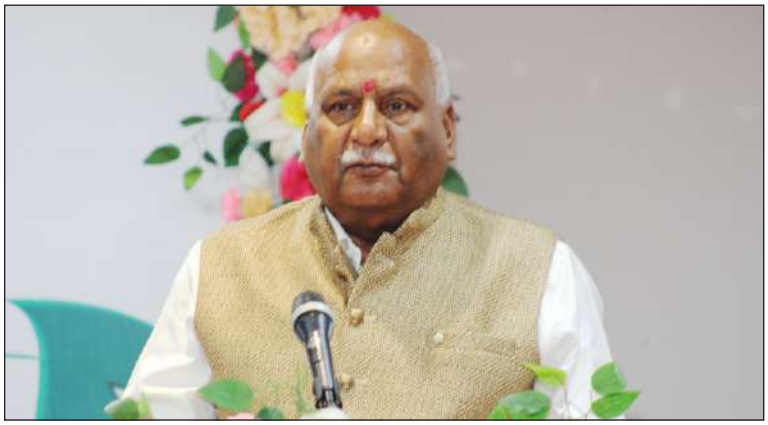

शोधार्थियों से संवाद करते हुए डॉ. ए.के. सिंह

दिनांक 27 अक्टूबर, 2024 को महायोगी विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित गुरु गोरखनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेज में तीन दिवसीय 'हितायु फेस्टिवल' का शुभारंभ किया गया, जिसमें डॉ. अरविंद कुशवाहा प्रधानाचार्य श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर गोरखपुर के द्वारा बताया गया कि आयुर्वेद बहुत पुरानी चिकित्सा पद्धति है और यह हमारे लिए बहुत गर्व की बात है और वो बहुत ही सम्मानित महसूस कर रहे है इस समारोह का हिस्सा बनकर।

इसके बाद डॉ. ए. के. सिंह वाइस चांसलर महायोगी गुरु गोरक्षनाथ आयुष यूनिवर्सिटी गोरखपुर ने आयुर्वेद चिकित्सकों को कहा कि आप अपने को गर्व से वैद्य कहें उन्हें अपनी अलग पहचान बनाने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने बताया कि कोई भी वैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग समाज के उद्धार के लिए करें। ना की विध्वंस के लिए, साथ ही उन्होंने आयुर्वेद के दिनचर्या, ऋतुचर्या, आहार, विहार जैसे आधारों को बताया। ताकि हम एक स्वस्थ जीवन यापन कर सके। उन्होंने वैद्यों को बताया कि उनको कैसे अपना ज्ञान वर्धन करना चाहिए ताकि एक कुशल चिकित्सक बन सके साथ ही उन्होंने कहा कि विशिष्ट बीमारियों पर वैद्यों को शोध एवं अनुसंधान करने की बहुत आवश्यकता है। तत्पश्चात कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे माननीय कुलपति, मेजर जनरल (डॉ.) अतुल बाजपेयी ने सभी का उत्साह वर्धन किया।

उन्होंने कहा कि वो इस समारोह और आयुर्वेद दिवस में शामिल हो कर बहुत ही हर्षित है। उन्होंने बताया कि आयुर्वेद को कई देश द्वारा लंबी और सुखद आयु के लिए अपनाया जा रहा है। लोगों में इसके प्रति विश्वास बढ़ता ही जा रहा है। नवप्रवेशित विद्यार्थियों से कहा कि प्रतिस्पर्धी की इस दुनिया में वैद्यों को अपनी पद्धति की बहुत अच्छी जानकारी की जरूरत है।

कार्यक्रम समाप्ति में अतिथियों का सम्मान डॉ. परीक्षित देवनाथ जीजीआईएमएस के द्वारा किया गया से किया गया। डॉ. गिरधर वेदांतम प्रधानाचार्य ने अतिथियों का स्वागत किया।

कार्यक्रम में डॉ. ए.के. सिंह, डॉ. अतुल बाजपेयी, डॉ. अरविंद कुशवाहाए, डॉ. रश्मि पुष्पन सहित बीएएमएस के नवप्रवेशित विद्यार्थी, देश के प्रतिष्ठित आयुर्वेद विद्यालय से आए प्रतिनिधि एवं छात्र शामिल रहें।

तीन दिवसीय 'हितायु संगोष्ठी'

प्रथम दिवस

प्रथम वैज्ञानिकी सत्र

अपने समस्याओं से सम्बन्धित प्रश्न करती शोधार्थी

गुरु गोरखनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

शोधार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. सरीन एन.एस.

दिनांक 27 अक्टूबर, 2024 को महायोगी विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित गुरु गोरखनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेज में तीन दिवसीय 'हितायु फेस्टिवल' के प्रथम वैज्ञानिक सत्र में वक्ता के रूप में उपस्थित डॉ. सरीन एन. एस. कंसलटेंट एफआईटीएम रिसर्च एंड इनफॉरमेशन सिस्टम फॉर डेवलपिंग नेशन, न्यू दिल्ली रहें। जिसकी सहदृअध्यक्षता डॉ. किरण कुमार रेड्डी एवं डॉ. शांतिभूषण हांडूर ने की। उनका विषय स्वास्थ्य सूचना विज्ञान, सार्वजनिक स्वास्थ्य और आयुर्वेद रहा, उन्होंने छात्रों से परस्पर संवाद करते हुए बताया कि हेल्थ इन्फॉर्मेटिक्स (स्वास्थ्य सूचना विज्ञान) क्या है।

उन्होंने बताया कि कैसे आप आईटी और कंप्यूटर का उपयोग कर पब्लिक हेल्थ के लिए इस्तेमाल करते है और उसके स्रोतों को समझते हुए बताया कि परिवारों के चिकित्सा रिकॉर्ड को कैसे सरकारों को भेजा जाता है ताकि सरकारों द्वारा बजट बनाकर सामूहिक स्वास्थ्य को बनाया जा सके और सभी नागरिकों की स्वास्थ्य की निगरानी की जा सके।

शोधार्थियों को उन्होंने बताया कि सामाजिक स्वास्थ्य क्या है और इसकी उपयोगिता क्या है। फिर इन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जो डाटा हमारे सरकारी चिकित्सालय में लिए जाते हैं उनको उच्च अधिकारीयों से कैसे एक राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाया जाता है। फिर उन्होंने सरकार की पहल NIHM के बारे में बताया।

जो राज्य के डाटा को ग्लोबल हेल्थ डाटा रिपोजिटरी (डब्ल्यू एचओ) को भेजती है ताकि एक विश्वस्तरीय स्तर बार स्वास्थ्य को बनाया जा सके। फिर सारे डाटा का वर्णनात्मक विश्लेषण और निर्देशात्मक विश्लेषण किया जाता है। फिर इसका डेटा रिपोर्टिंग और विजुअलाइज़ेशन किया जाता है। फिर उन्होंने आयुष ग्रिड के बारे में बताया जिसकी शुरुआत सीसीआईआरएस द्वारा किया गया है। जिसमें आयुष डाटा को भी सम्मिलित किया गया है।

उन्होंने नमस्ते पोर्टल के बारे में बताया जिसमें 2888 आयुर्वेद मोर्बिडिटी कोड है। जिससे व्यक्ति के विभिन्न व्याधियों को आयुर्वेद के अनुसार पता किया जा सकता है। अंततः उन्होंने एचआईएमएस के बारे में भी बताया। अंत में डॉ. अरविंद कुशवाहा द्वारा स्मृति चिन्ह देकर डॉ. सरीन को सम्मानित किया गया।

तीन दिवसीय 'हितायु संगोष्ठी'

प्रथम दिवस

द्वितीय वैज्ञानिकी सत्र

गुरु गोरखनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

'तीन दिवसीय 'हितायु संगोष्ठी'' के द्वितीय वैज्ञानिकी सत्र में शोधार्थियों को पीपीटी के माध्यम से सम्बोधित करते हुए डॉ. गौरव राय द्विवेदी

दिनांक 27 अक्टूबर, 2024 को महायोगी विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित गुरु गोरखनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेज में तीन दिवसीय 'हितायु फेस्टिवल' के द्वितीय वैज्ञानिक सत्र के वक्ता के रूप में उपस्थित डॉ. गौरव राय द्विवेदी डायरेक्टर आई.सी.एम.आर.एम.आर.सी. गोरखपुर ने 'प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में आयुर्वेद औषधीय पौधों की भूमिका' विषय पर शोधार्थियों को सम्बोधित किया, जिसकी अध्यक्षता डॉ.सुमित कुमार एम. ने की।

डॉ. गौरव राय द्वितीय ने बताया कि आई.सी.एम.आर. जैवचिकित्सा अनुसंधान के निर्माण, समन्वय और संवर्धन से संबंधित है। उन्होंने बताया कि आर.एम.आर.सी. गोरखपुर भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परामर्श संस्थान के 27 संस्थानों में सबसे युवा संस्थान है। कोरोना विषाणु के बारे में बताते हुए विषाणु जनित बीमारियों के बारे में बताया और उनके उपचार और सावधानियों के बारे में भी बताया। उन्होंने फिर विभिन्न प्रकार के विषाणु जनित रोगों के लिए उपलब्ध और अनुपलब्ध और मान्यता प्राप्त दवाओं के बारे में भी बताया। आगे के क्रम में उन्होंने जीवाणु जनित रोगों के बारे में बताया।

उन्होंने बताया कि कितने प्रकार के जीवाणु संक्रमणों की औषधि होती है और वो कार्य कैसे करती है।

विभिन्न एंटीबायोटिक और उन औषधियों के बनाने और नैदानिक परीक्षण में लगने वाले समय और चरण और उनके मूल स्रोतों के बारे में भी बताया। अंततः उन्होंने पौधों में उपस्थित एंटी माइक्रोबियल एजेंट के बारे में और उनके शोधन के बारे में भी बताया।

अपने समस्याओं के समाधान हेतु प्रश्नोत्तर करते हुए विद्यार्थी एवं शोधार्थी

तीन दिवसीय 'हितायु संगोष्ठी'

द्वितीय दिवस

वैज्ञानिकी सत्र | **गुरु गोरखनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज**

तीन दिवसीय 'हितायु संगोष्ठी' के द्वितीय दिवस पर शोधार्थियों को मधुमेह विषय पर सम्बोधित करते हुए डॉ. जी. एस. तोमर

दिनांक 28 अक्टूबर, 2024 को गुरु गोरखनाथ चिकित्सा विज्ञान संस्थान, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में प्रायोजित हितायु–2024 राष्ट्रीय सेमिनार में मधुमेह चिकित्सा पर अपने अतिथि व्याख्यान में विश्व आयुर्वेद मिशन के संस्थापक अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) जी. एस. तोमर ने बताया कि वैश्विक परिदृश्य में मधुमेह रोगियों की निरन्तर बढ़ती हुई संख्या गम्भीर चिन्ता का विषय है। भारत में भी इन रोगियों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि देखने को मिल रही है। इसका मूल कारण हमारी जीवनशैली में हो रहा बदलाव है। मधुमेह विकृत जीवनशैली जन्य रोगों की श्रेणी में प्रमुख है। आज स्थिति इतनी भयावह है कि हर घर में कोई न कोई मधुमेह रोग से पीड़ित है। पाश्चात्य चिकित्सा विज्ञान के अनुसार इसकी त्रिस्तरीय चिकित्सा बताई गई है। इनमें पहला है भोजन में शर्करा युक्त द्रव्यों यथा–आलू, चावल, चीनी का नियंत्रण एवं पूड़ी पराठा एवं घी तैल में तले पदार्थों का निषेध, दूसरा है नियमित व्यायाम विशेषतया 45 मिनट तेज गति से टहलना एवं विश्रांतिकर योगासन जैसे निष्पंदभाव एवं शवासन का नियमित अभ्यास तथा तीसरे पर रक्त शर्करा नियंत्रक औषधियाँ बताई गईं हैं।

वर्तमान परिदृश्य में मधुमेह से पीड़ित व्यक्ति ही नहीं चिकित्सकों का ध्यान भी रक्त शर्करा के नियंत्रण पर ही केन्द्रित रहता है। जबकि आवश्यकता इस बात की है कि उसकी आँख, हृदय, किडनी तथा नाड़ियों जैसे महत्वपूर्ण अंगों को मधुमेह के घातक उपद्रवों से बचाया जा सके। इसी के दृष्टिगत आज पाश्चात्य विधा के चिकित्सकों की राय भी बदल रही है। उनका मानना है कि मधुमेह में रक्त शर्करा का नियंत्रण 'एक छोटी लड़ाई जीतना एवं बड़ा युद्ध हारना है'। विश्व स्वास्थ्य संगठन का मानना है कि शरीर का ऐसा कोई भी महत्वपूर्ण अंग नहीं है जो देर सबेर इसके घातक उपद्रवों से प्रभावित न होता हो। आँखों का रेटिना, किडनी, हृदय एवं नाड़ीतंत्र इससे विशेष रूप से प्रभावित होता है। यहाँ तक कि इसकी चिकित्सा में इंसुलिन या अन्य रक्तशर्करा ह्रासक औषधियाँ के प्रयोग के बाद भी इन घातक उपद्रवों से नहीं बचा जा सकता है।

आयुर्वेद प्रारम्भ से ही सर्वांगीण (होलिस्टिक) चिकित्सा की बात करता है। इसका मूल उद्देश्य मधुमेह रोगी के महत्वपूर्ण अंगों को घातक उपद्रवों से बचाना है। साथ ही साथ आयुर्वेदीय औषधियाँ एक तरफ़ जहाँ इंसुलिन के स्राव को बढ़ाती हैं, वहीं दूसरी ओर ये इंसुलिन के विरुद्ध बन रहीं एण्टीबॉडीज को रोककर इंसुलिन की सक्रियता को बढ़ाकर इसे प्रभावी भी बनाती हैं। इससे पाश्चात्य औषधियों की सक्रियता लम्बे समय तक बनी रहती है तथा इनकी मात्रा में भी वृद्धि नहीं करनी पड़ती है। पाश्चात्य चिकित्सा के अनुसार मेटाबॉलिक सिन्ड्रोम, प्रीडायबिटीज एवं डायबिटीज़ मधुमेह की तीन अवस्थाएँ हैं। इनमें से मेटाबॉलिक सिन्ड्रोम व प्री–डायबिटीज को आयुर्वेद चिकित्सा द्वारा पूर्णतः नियंत्रित किया जा सकता है। तथापि डायबिटीज़ की अवस्था में

आयुर्वेद न केवल मधुमेह के लक्षणों के प्रशमन में लाभकारी है, अपितु ये औषधियाँ पाश्चात्य चिकित्सा जनित दुष्प्रभावों को भी रोककर शरीर के महत्वपूर्ण अंगों को मधुमेह के घातक उपद्रवों से भी बचातीं हैं।

जैसा कि पूर्व में भी बताया गया है कि मधुमेह एक विकृत जीवनशैली जन्य रोग है। आरामतलब जीवनशैली, मिठाई आदि हाई ग्लाइसीमिक इंडेक्स पदार्थों का अधिक सेवन एवं मानसिक तनाव मधुमेह के प्रमुख कारण हैं जिन्हें आयुर्वेदीय जीवनशैली के परिपालन से रोका जा सकता है।

कोरोना कालखण्ड में हमारी सनातन जीवनशैली एवं आहार विहार ही नहीं आयुर्वेदीय औषधियों में भी वैश्विक परिदृश्य में अपनी छाप छोड़ी हैं। आयुर्वेद में प्रारम्भ से ही डायबिटीज़ की चिकित्सा के लिए नियंत्रित जीवनशैली एवं पथ्यापथ्य को प्राथमिकता दी गई है। इसके बाद ही औषधि व्यवस्था की बात कही गई है। प्रातःकाल ब्राह्म मुहूर्त में उठना, कम से कम 45 मिनट नियमित टहलना (ब्रिस्क वॉक) एवं विश्रांतिकर (रिलेक्सेसन) योगासन का अभ्यास डायबिटीज़ रोगियों के लिए अमृतवत फलदायी है। कच्ची हल्दी का 5 ग्राम चूर्ण 40 मि.लि. आँवला रस में मिलाकर प्रातःकाल नाश्ता के तुरन्त पहले या बाद में लेना मधुमेह में अत्यन्त लाभकारी है। खानपान में मोटे अनाज विशेषकर जौ, चना, बाजरा, ज्वार, मक्का, रागी, सांवा, कोदों के साथ काला गेहूँ मिलाकर बनाई गई चपाती न केवल न्यूनतम ग्लाइसीमिक इण्डेक्स से युक्त है, अपितु अधिक रेशेदार (फ़ाइब्रस) होने से मधुमेह नियंत्रण के साथ–साथ हमारी आँतों (कोलन) को भी स्वस्थ रखतीं हैं। यद्यपि चावल अधिक ग्लाइसीमिक इण्डेक्स वाला होने के कारण मधुमेह में अपथ्य है। परन्तु साठी चावल न्यूनतम ग्लाइसीमिक इण्डेक्स वाला होने के कारण मधुमेह में पथ्य है। आई सीएमआर के अनुसार एक छोटी कटोरी चावल (25 ग्राम) से लगभग 80 कैलोरी मिलती है। वहीं 6'' व्यास की एक गेहूँ की चपाती से भी 80 केलोरी मिलती है। अतः एक चपाती के स्थान पर एक छोटी कटोरी चावल पकाते समय तेजपत्ता डालकर लिया जा सकता है।

साग–सब्ज़ियों में मैथी, परवल, कुंदरु, निनुआ, लौकी, करेला मधुमेह में पथ्य हैं। आलू आदि कन्द वाली सब्ज़ियों को पहले छील काटकर उबाल लें। उसके स्टार्च को निकाल देने के बाद अल्प मात्रा में प्रयोग कर सकते हैं।

घी–तेल का प्रयोग कम से कम करें। रिफाइण्ड का प्रयोग कदापि न करें। शुद्ध सरसों या मूँगफली के तेल का प्रयोग करें। देशी घी का प्रयोग अल्प मात्रा में अपनीं डाइनिंग टेबल तक सीमित रखें। उसका प्रयोग किचन में न करें। जहाँ तक संभव हो गाय का घी ही प्रयोग करें। विश्व के अनेक केन्द्रों पर हुए शोध से यह प्रमाणित हो चुका है कि इससे कॉलेस्ट्रोल, ट्राई ग्लिसराइड एवं एल डी एल जैसे हानिकारक वसा कम होते हैं तथा एच डी एल जैसे लाभकारी वसा में वृद्धि होती है। माँसाहार में बहुत आवश्यक होने पर श्वेत माँस (व्हाइट मीट) का प्रयोग करें। लाल माँस (रैड मीट) के प्रयोग से बचें।

औषधियों में शुद्ध शिलाजीत एवं चन्द्रप्रभा वटी सर्व प्रयोज्य है। बसन्त कुसुमाकर रस, डायबकल्प प्लस एवं बीजीआर–34 जैसी प्रभावी औषधियाँ मात्रानुसार चिकित्सक के परामर्श से प्रयोग करें। ये औषधियाँ पाश्चात्य रक्त शर्करा ह्रासक (ओरल हाइपोग्लाइसिमिक ड्रग्स एवं इंसुलिन) के साथ भी प्रयोग की जा सकती हैं। जिससे एक तरफ़ उन औषधियों के रक्तशर्करा ह्रासक प्रभाव में वृद्धि होती है तथा उनके प्रति रजिस्टेन्स पैदा नहीं हो पाता। वहीं दूसरी ओर मधुमेह के घातक उपद्रवों से हमारे शरीर के महत्वपूर्ण अंगों की रक्षा भी होती है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि 'मधुमेह अभिशाप नहीं वरदान है' क्यों कि ज्यों ही हमें पता चलता है कि हम मधुमेह की तरफ़ जा रहे हैं तो हम आहार नियंत्रण एवं नियमित व्यायाम के द्वारा अपने शरीर को स्वस्थ रख सकते हैं। मेरा मानना है कि एक पीस मिठाई का खाने से अधिक उसके बारे में निरन्तर सोचना अधिक हानिकारक है। तनाव मुक्त स्वस्थ जीवनशैली मधुमेह नियंत्रण का मूल मंत्र है।

तीन दिवसीय 'हितायु संगोष्ठी'

द्वितीय दिवस

वैज्ञानिकी सत्र

गुरु गोरखनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

तीन दिवसीय 'हितायु संगोष्ठी' के द्वितीय दिवस वैज्ञानिकी सत्र में पीपीटी के माध्यम से शोधार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. अरविंद कुशवाहा

दिनांक 28 अक्टूबर, 2024 को गुरु गोरखनाथ चिकित्सा विज्ञान संस्थान, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में प्रायोजित हितायु–2024 राष्ट्रीय सेमिनार के द्वितीय दिन के वैज्ञानिक सत्र के मुख्य वक्ता डॉ. अरविंद कुशवाहा, प्राचार्य, गुरु श्री गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस एण्ड रिसर्च सेन्टर (मेडिसिन संकाय) एवं सत्र की अध्यक्षता डॉ. गिरधर वेदांतम, गुरु श्री गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस (आयुर्वेद संकाय) द्वारा की गयी। डॉ. रश्मि पुष्पन ने मुख्य वक्ता डॉ. अरविंद कुशवाहा को स्मृति चिन्ह देखकर सम्मानित किया।

मुख्य वक्ता डॉ. अरविंद कुशवाहा अपने व्याख्यान जिसका विषय जीवनशैली विकारों में एकीकृत स्वास्थ्य देखभाल पर बताया कि अगर हमारे अंदर पहले ही कोई जीवन शैली विकार है तो हमें और दूसरे विकार होने की संभावना बढ़ जाती है। भारत में हर्बल संपदा का खजाना है जिसका उपयोग हम विभिन्न रोगों संपूर्ण रूप में कर कर सकते हैं।

आगे उन्होंने संपूर्ण आहार को बताते हुए बताया कि आहार का सबसे अच्छा और बड़ा स्रोत पौध आधारित आहार ही है। दुनिया भर में 1990 से अबतक वयस्कों में मोटापा दुगनी, किशोरावस्था मोटापा चौगुनी बढ़ी है। उन्होंने वर्तमान स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली की कुछ कमियां भी बताइए। जिनमें अधिकांश रोग स्वयं सीमित होते है, अधिकांश लक्षण मूलतः मनोदैहिक होते हैं, लक्षणों का अति–चिकित्साकरण, सभी गोलियों का कुछ न कुछ प्रतिकूल प्रभाव होता है, अधिक अस्पताल कम स्वास्थ्य, चिकित्सा के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का प्रभुत्व आदि है।

जीवनशैली चिकित्सा में संपूर्ण खाद्य पौधों पर आधारित आहार और नियमित शारीरिक गतिविधि का उपयोग शामिल है। किसी भी बीमारी के उपचार और उलटाव के लिए प्राथमिक चिकित्सा के रूप में सकारात्मक सामाजिक संबंध भी जरूरी है। दवाओं का एकीकरण क्या है जिसमें हम सभी एलोपैथी के साथ और पद्धति के दवाओं को भी साथ में उपयोग करते है। अंततः डॉ. गिरधर वेदांतम जी ने डॉ. अरविंद कुशवाहा जी का एवं एवं उपस्थित सभी को आभार ज्ञापित किया।

तीन दिवसीय 'हितायु संगोष्ठी'

द्वितीय दिवस

वैज्ञानिकी सत्र

गुरु गोरखनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

तीन दिवसीय 'हितायु संगोष्ठी' के द्वितीय दिवस वैज्ञानिकी सत्र के दौरान शोधार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. राज किशोर सिंह

दिनांक 28 अक्टूबर, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के गुरु श्री गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस (आयुर्वेद संकाय) द्वारा आयोजित हितायु सेमिनार 2024 के द्वितीय दिवस के छठे वैज्ञानिक सत्र के मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. राज किशोर सिंह, आचार्य मेडिसिन, बी.आर.डी. मेडिकल कॉलेज, गोरखपुर जी को डॉ. रश्मि पुष्पन ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। छठे वैज्ञानिक सत्र के मुख्य वक्ता रहे डॉ. राज किशोर सिंह ने अपने विषय–मधुमेह तथा उससे जुड़ी जटिलताओं से निपटने की रणनीति पर बताया कि मधुमेह प्रकार दो की रोगजनन प्रक्रिया को समझाया।

टाइप दो मधुमेह से निपटने की रणनीतियों के बारे में बताया जिसमें प्रारंभिक पहचान स्क्रीनिंग कार्यक्रमों, जागरूकता अभियानों पर ध्यान केंद्रित करें, सामुदायिक स्वास्थ्य व्यवहारिक समर्थन, डिजिटल स्वास्थ्य उपकरण, भागीदारी को प्रोत्साहित करना आदि शामिल है। उन्होंने आगे बताया कि 50 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या को पता ही नहीं है कि उन्हें मधुमेह है। उन्होंने बताया कि जब हम दूसरी बीमारियों के लिए रक्त की जांच करते हैं तो हमें पता चलता है कि हमारा मधुमेह स्तर बढ़ा हुआ। जीवन शैली के तरफ इशारा करते हुए बताया कि हमें अपने भोजन में जो सूक्ष्म पोषक तत्व होते हैं ध्यान देना चाहिए जैसे कि कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन और वसा। बाद में उन्होंने बताया कि अपने अपने जीवन शैली में कुछ बदलाव करके जैसे कि हम योग को शामिल कर सकते हैं प्राणायाम को शामिल करते हैं और हम तनाव प्रबंधन, नींद प्रबंधन, वजन प्रबंधन करके भी इस व्याधि से बच सकते हैं। मधुमेह से होने वाली जटिलताओं एवं विभिन्न नए शोधों के बारे में जो मधुमेह को नियंत्रित करने में कारगर है बताया। सत्र समाप्ति पर डॉ. रश्मि पुष्पन ने सभी को आभार ज्ञापित किया।

तीन दिवसीय 'हितायु संगोष्ठी'

तृतीय दिवस

वैज्ञानिकी सत्र

गुरु गोरखनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

तीन दिवसीय 'हितायु संगोष्ठी' के तृतीय दिवस पर शोधार्थियों को सम्बोधित करती डॉ. भारती कुमार मंगलम

दिनांक 29 अक्टूबर, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के गुरु श्री गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस (आयुर्वेद संकाय) द्वारा आयोजित हितायु सेमिनार 2024 के तृतीय दिवस का शुभारम्भ दीप प्रज्वलन और सरस्वती वंदना के साथ हुई आज की आठवीं वैज्ञानिक सत्र में 'महिलाओं के प्रजनन स्वास्थ्य और रोग प्रबंधन' विषय पर डॉ. भारती कुमार मंगलम एप्रोफेसर, प्रसूति स्त्री रोग नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ आयुर्वेद जयपुर ने शोधार्थियों को सम्बोधित किया। सत्र की अध्यक्षता डॉ. मिनी के. वी. ने किया।

डॉ. भारती कुमार मंगलमं ने बताया कि आयुर्वेद लिंग आधारित प्रोफिलैक्सिस के साथ–साथ लिंग आधारित स्वास्थ्य देखभाल पर भी विचार करता है।

अष्टांग आयुर्वेद की कौमारभृत्य शाखा में इसका स्पष्ट उल्लेख मिलता है। आयुर्वेद और महिला स्वास्थ्य के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा आयुर्वेद महिलाओं के स्वास्थ्य को विभिन्न तरीकों से देखता है। इन संदर्भों की समीक्षा के बाद यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि स्वास्थ्य विनियामक प्रक्रियाएं–राजस्वलाचार्य ऋतुमती चर्या, सुतिका परिचर्या आदि फिर इन परिचर्या को बताते हुए उन्होंने उनके आहार और विहार को भी बताया। राजस्वला चर्या की महत्वपूर्णता में बताया किमासिक धर्म के दौरान, ग्रंथि का मूल घटक बेसालिस परत में रहता है और उपकला कोशिकाएं उजागर सतह को फिर से उपकलाकृत करती हैं और फिर बढ़ते एस्ट्रोजन स्तर के प्रभाव में नए कार्यात्मकता को पुनर्जीवित करने के लिए बढ़ती हैं आगे उन्होंने बताया कि रजस्वला परिचर्या कैसे मदद करती है। षष्ठीक साली और क्षीर यह आहार प्रकृति में कायाकल्प करने वाला है जिससे कार्यात्मकता के पुनर्जनन में मदद मिलती है।

दिवास्वप्न दैनिक या सर्कैडियन लय को बदल देता है, जिससे एचपीओ अक्ष में गड़बड़ी पैदा हो जाती है। सहवास में लिप्त होना एंडोमेट्रियम को नुकसान पहुंचाता है, इसलिए किसी भी स्तर पर अभिघात अपान वात को खराब कर देता है, इसलिए ओवेरियन ग्रंथि स्टेरॉयड के स्राव के साथ–साथ कार्य में भी गड़बड़ी होगी। आगे उन्होंने सूतिका परिचर्या के बारे में बताते हुए बताया कि उष्ण जलपरिषेक, स्नेहापन, घृत के तेल का अभ्यंगकरना चाहिए।

रजस्राव एक शोधन (प्राकृतिक रक्तमोक्षण) की तरह है, शोधन संसर्जन के बाद रजस्वला चर्या है। जो एंडोमेट्रियम स्तर पर अग्नि को पुनर्स्थापित करता है। स्त्री रोग एवं प्रसूति विज्ञान पश्चिमी चिकित्सा एवं आयुर्वेद के तहत उन्होंने विभिन्न विकारों के बारे में बताया जैसे एपॉलीसिस्टिक ओवेरियन सिंड्रोम एक्वालिटी ऑफ लाइफ इन ब्रेस्ट कैंसर पेशेंट एपोस्ट मेनोपॉज सिंड्रोम आदि। आगे उन्होंने बताया कि महिला बांझपन. कम आरक्षित डिम्बग्रंथि स्तर में कमी से पता चला आर्तवक्षोयण (कम डिम्बग्रंथि आरक्षित) के कारण स्त्री वंध्याता (महिला बांझपन) में सुकुमार रसायण की प्रभावकारिता है।

अध्ययन के लिए सुकुमार रसायन का चयन किया गया। यह एक मिश्रित औषधि है जिसे अष्टांगहृदय में वर्णित लेह रूप में तैयार किया गया था। आगे के क्रम में उन्होंने विभिन्न स्त्री एवं प्रसूति लोगों को बताया तथा उनके औषधीय के बारे में भी बताया। और उन्होंने फिर बताया कि विभिन्न औषधीय जो शोध अनुसंधान से बनाई गई है वह कितनी कारगर है। अंत में डॉ. मिनी के. वि. जी द्वारा उनका आभार ज्ञापन किया गया तथा गुरु गोरखनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के वाइस चांसलर डॉ. अतुल बाजपेई द्वारा उन्हें स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

अक्टूबर माह की मुख्य बैठकें

05 अक्टूबर 2024 माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में निम्न विषयों पर बैठक सम्पन्न हुई:–

श्री नीरज गौतम, मुख्य अभियंता द्वारा विश्वविद्यालय में चल रहे विभिन्न निर्माण कार्यों की प्रगति से अवगत कराया गया तथा निम्नलिखित भवनों के कार्य उनके सम्मुख उल्लिखित तिथि तक पूर्ण कर लिये जाने पर सहमति प्रदान की गई।

- स्टाफ क्वार्टर का कार्य (प्रथम व द्वितीय तल) – 31 अक्टूबर, 2024 तक
- बेसमेंट नर्सिंग कालेज व आयुर्वेदिक हास्पीटल– 30 नवम्बर, 2024 तक
- पंचकर्मा भवन का रख–रखाव कार्य – 30 नवम्बर, 2024 तक

14 अक्टूबर 2024 माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में सह आचार्य, सहायक आचार्य एवं ट्यूटर नर्सिंग के पदों पर नियुक्ति हेतु चयन समिति की बैठक सम्पन्न हुई।

15 अक्टूबर 2024 सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के बॉयोटेक्नालाजी विभाग के सहायक आचार्य पद पर नियुक्ति हेतु चयन समिति की बैठक सम्पन्न हुई।

16 अक्टूबर 2024 माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में निम्न विषय पर बैठक सम्पन्न हुई:–

बौद्धिक संपदा अधिकार को तीन भागों में बांटा गया यथा–

- कॉपीराइट कोई साहित्यिक कार्य, ड्राइंग, फोटो, फिल्म, संगीत और नृत्य है, ये सभी कॉपीराइट के अन्तर्गत हैं।
- पेटेंट में उत्पाद पेटेंट और प्रक्रिया पेटेंट सम्मिलित है।
- ट्रेडमार्क में लोगो, प्रतीक, पैटर्न चिन्ह, विशिष्ट चिन्ह सम्मिलित है।

पेटेंट दाखिल करने के लिए निम्नलिखित मानदण्ड होने चाहिए।

- यह एक नवीन कार्य होना चाहिए।
- इसमें नवाचार होना चाहिए।
- इसका औद्योगिक अनुप्रयोग होना चाहिए।

चरणवद्ध तरीके से निम्नलिखित मानदंडों पर पेटेंट दाखिल किया जा सकता है।

- शुल्क के साथ पेटेंट दाखिल करना।
- 18 माह बाद सार्वजनिक डोमेन में पेटेंट का प्रकाशन।
- पेटेंट की जॉच में लगभग डेढ़ से दो वर्ष लगते हैं।
- पेटेंट अनुदान।

पेटेंट के लिए कौन आवेदन कर सकते हैं:–

- व्यक्ति
- पेटेंट एजेंट
- लघु उद्योग
- स्टार्टअप
- शैक्षणिक संस्थान

देश में पेटेंट के क्षेत्रीय कार्यालय यथा दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई और कोलकाता हैं, जिसमें विश्वविद्यालय दिल्ली क्षेत्र के अन्तर्गत आता है और हमें पेटेंट को दिल्ली पेटेंट कार्यालय में जमा करना होगा।

यदि हमारे पास कोई आइडिया है, तो हम इसे प्रोविजनल फाइलिंग कर सकते हैं।

यदि यह पूरा विवरण है, तो साधारण फाइलिंग में आवेदन कर सकते है।

इसमें अधिकतम दावों की संख्या 10 तक हो सकती है, उसके बाद अगर कोई दावा की जाती है तो उसका शुल्क अलग से देय होगा।

कुल मिलाकर लगभग 30 पेज का हो सकता है, जिसमें सभी स्पेसिफिकेशन, ड्राइंग, फिगर और दावे शामिल हैं।

पेटेंट हेतु कुछ आवेदन पत्र हैं, जो इस प्रकार है–

आवेदन पत्र–1: सभी अभिलेख पूर्ण विनिर्देश और ड्राइंग के साथ अपलोड किए जाते हैं, पेटेंट के समय सभी अभिलेख उपलब्ध होने चाहिए।

आवेदनपत्र : 9 15 दिनों के भीतर प्रकाशन के लिए यदि फार्म 9 दाखिल नहीं किया जाता है तो प्रकाशन 18 महीनें में किया जाएगा, शीघ्र प्रकाशन के लिये शुल्क देय होगा।

16 अक्टूबर 2024

माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में निम्न विषय पर बैठक सम्पन्न हुई:–

"हितायु–2024" का उद्घाटन दिनांक 27 अक्टूबर, 2024 को पूर्वाह्न 11 बजे कराया जाय।

धनवन्तरि जयन्ती पर बीएएमएस के विद्यार्थियों की उपस्थिति अनिवार्य रहेगी।

बीएएमएस के विद्यार्थियों से पंजीकरण शुल्क के रुप में रुपये 100/– लिया जाये तथा फाइल कवर व पेन उनको दिया जाये।

आने वाले डेलीगेट्स में से पीजी के विद्यार्थियों को महंत गोपालनाथ छात्रावास तथा आचार्य, सह आचार्य व सहायक आचार्य को अतिथि गृह अथवा होटल में अवस्थान की व्यवस्था की जाए।

डेलीगेट्स को रेलवे स्टेशन/एयरपोर्ट से रीसिव करने की समिति बनाकर उनका अच्छे ढंग से स्वागत किया जाये।

एमबीबीएस व बीएएमएस का दीक्षारम्भ कार्यक्रम दिनांक 5 से 9 नवम्बर, 2024 तक संयुक्त रुप से कराया जाये। दोनो का उद्घाटन व समारोप एक साथ किए जाये।

दीक्षारम्भ कार्यक्रम के अन्तर्गत दिनांक 11 से 19 नवम्बर, 2024 की तिथियों में एमबीबीएस व बीएएमएस का अलग–अलग कार्यक्रम कराया जाये।

श्री अमित कुमार सिंह को निर्देशित किया गया कि डॉ. शशिकान्त सिंह से वार्ता कर मेडिकल कालेज की फैकल्टी के बैठने की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।

श्री अमित कुमार सिंह को कक्षाओं की नम्बरिंग के पुनरीक्षण की जिम्मेदारी दी गई।

16 अक्टूबर 2024

माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में निम्न विषय पर बैठक सम्पन्न हुई:–

बैठक के आरम्भ में श्री बिनीत कुमार श्रीवास्तव, उप महाप्रबन्धक, के. के. कंस्टक्शन प्रा. लि. एवं श्री आशीष कुमार सिंह, सहायक अभियंता ने साइट पर हो रहे निम्नलिखित निर्माण कार्यों की प्रगति से अवगत कराया गया।

साइट पर वर्तमान में 6/7 पाइलिंग मशीन कार्यरत हैं।

साइट पर ब्लॉक–ए में लगभग 670 पाइलिंग पूर्ण हो चुकी है।

राष्ट्रीय भवन संहित (एनबीसी) के नियमानुसार पाइल लोड टेस्ट तथा पाइल इंस्टीग्रिटी टेस्ट करने हेतु अरुण स्वायल लैब को आदेशित किया जा चुका है।

विगत दिनों में भारी बारिश होने के कारण वाटर टेबल में हुई अनापेक्षित वृद्धि के कारण पाइल कट ऑफ लेंथ तक पाइल तोड़ पाना सम्भव नहीं हो पा रहा है। पाइल कट ऑफ लेंथ तक खुदाई करने पर पूरी जमीन जलमग्न हो जा रही है, जिसका फोटोग्राफ प्रस्तुत किया गया।

5 दिनों के अंतर पर इस सब सॉइल वाटर के नीचे जाने के भी फोटोग्राम साक्ष्य में दिए गये हैं।

साइट पर कार्य को तीव्र करने के लिए दो विकल्प सुझाया गया:–

पहला विकल्प:– कई बोर होल करके पम्पसेट लगाकर जल निकासी पंप (Dewatering) की व्यवस्था की जाए जो कि बिजली की खपत तथा जनरेटर के कारण बहुत खर्चीला माध्यम है।

दूसरा विकल्प:–वर्तमान वाटर टेबल में मार्किंग लगाकर अगले एक हफ्ते तक पानी के नीचे जाने की गति को स्टडी करना होगा।

इस बीच पाइलिंग का कार्य निरंतर में चलता रहेगा।

आर्किटेक्ट श्री आशीष श्रीवास्तव जी ने बताया कि ब्लाक–ए में लगभग 1500 पाइल होनी है।

ब्लाक–ए भवन को एक्सपेंशन जॉइंट के कारण तीन भागों में लगभग 13000 से 15000 वर्ग फीट के एक–एक भाग में विभाजित है।

25 अक्टूबर 2024

डॉ. राजेश बहल, निदेशक, महायोगी गोरखनाथ चिकित्सालय की अध्यक्षता में आक्सीजन प्लांट आपरेटर तथा एक्सरे टेक्निशियन पदों पर नियुक्ति हेतु चयन समिति की बैठक सम्पन्न हुई।

नवम्बर, 2024 की प्रस्तावित कार्ययोजनाएं

विभागीय आयोजन

गुरू गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस

18 से 23 नवम्बर, 2024	द्वितीय व्यावसायिक सत्र की तृतीय आंतरिक परीक्षा (सुश्रुत बैच)
05 से 20 नवम्बर, 2024	ट्रांजिसनल कैरीकुलम (बीएएमएस बैच–2024–25)

श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेण्टर

05 से 09 नवम्बर, 2024	इंडेक्शन कोर्स (एमबीबीएस बैच–2024–25)

सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

18 से 22 नवम्बर, 2024	तृतीय आंतरिक परीक्षण
23 नवम्बर, 2024	अतिथि व्याख्यान (आईपीआर)

कृषि संकाय

15 नवम्बर, 2024	अतिथि व्याख्यान
20 नवम्बर, 2024	शैक्षणिक भ्रमण
20 से 30 नवम्बर, 2024	द्वितीय आंतरिक परीक्षा

महंत अवेद्यनाथ पैरामेडिकल कॉलेज

08 नवम्बर, 2024	प्रथम वर्ष की मुख्य प्रयोगात्मक परीक्षा
09 नवम्बर, 2024	द्वितीय वर्ष की मुख्य प्रयोगात्मक परीक्षा
11–12 नवम्बर, 2024	प्रथम वर्ष की आंतरिक परीक्षा

फॉर्मेसी संकाय

25 नवम्बर, 2024	अतिथि व्याख्यान
28–30 नवम्बर, 2024	आंतरिक परीक्षा

गुरू श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग

10 नवम्बर, 2024	विश्व टीकाकरण दिवस
14 नवम्बर, 2024	विश्व मधुमेह दिवस

समाचार दर्पण

महायोगी गोरक्षनाथ विवि को मिली एमबीबीएस की 100 सीटों की मान्यता

- नीट स्टेट कोटा की प्रथम काउंसिलिंग में पहले मिली मान्यता की सभी 50 सीटों पर हो चुका है प्रवेश

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। गोरखपुर में निजी क्षेत्र के पहले विश्वविद्यालय महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के मेडिकल कॉलेज (श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) को नेशनल मेडिकल कमीशन से अब एमबीबीएस पाठ्यक्रम के लिए 100 सीटों की मान्यता मिल गई है। इसके पहले नेशनल मेडिकल कमीशन (एनएमसी) ने 50 सीटों की मान्यता दी थी और नीट स्टेट कोटा काउंसिलिंग में अब तक इन सभी सीटों पर प्रवेश हो चुका है। श्रीगोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर की अपील पर जांचोपरांत एनएमसी ने अब एमबीबीएस की मान्यता बढ़ाकर 100 सीटों के लिए कर दी है। यह जानकारी देते हुए श्रीगोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) अरविंद कुशवाहा ने बताया कि जल्द ही बढ़ी 50 सीटों पर भी प्रवेश प्रक्रिया नीट काउंसिलिंग से शुरू हो जाएगी।महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय द्वारा की गई अपील के परीक्षण में एनएमसी ने पाया कि 100 एमबीबीएस सीटों के लिए जरूरी 420 बेड के हॉस्पिटल के सापेक्ष 450 बेड का हॉस्पिटल क्रियाशील है। साथ ही अन्य सभी आवश्यक इंफ्रास्ट्रक्चर, फैकल्टी भी मानक के अनुरूप हैं। इसे देखते हुए 30 सितंबर को अपील को इस आदेश के साथ के साथ निस्तारित किया गया कि श्रीगोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर को सत्र 2024-25 के लिए एमबीबीएस की 100 सीटों पर मान्यता प्रदान की जाती है। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय को एमबीबीएस कोर्स संचालन को लेकर यह बड़ी उपलब्धि विश्वविद्यालय स्थापना के मात्र तीन साल में हासिल हुई है। नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी के तमाम रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के साथ ही यहां गुरु श्रीगोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के अंतर्गत 2021 से ही बीएएमएस का पाठ्यक्रम संचालित है। एमबीबीएस की मान्यता बढ़कर 100 सीटों पर पहुंचने पर विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने विश्वविद्यालय परिवार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोगों को बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में यह समूचे पूर्वांचल के युवाओं के लिए बड़ी सौगात है। कुलपति ने बताया कि इस मेडिकल कॉलेज का हॉस्पिटल आने वाले समय में अपग्रेड होकर 1800 बेड का अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त हो जाएगा।महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा महायोगी गुरु गोरखनाथ विश्?वविद्यालय में स?थापित यह मेडिकल कॉलेज गोरक्षपीठाधीश?वर एवं प्रदेश के मुख?यमंत्री योगी आदित?यनाथ का ड्रीम प्रोजेक?ट भी है।

श्रीगोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) अरविंद कुशवाहा के अनुसार पहले वर्ष इस मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की 50 सीटों पर प्रवेश प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। अब मान्यता वृद्धि की 50 सीटों पर प्रवेश लिया जाएगा। एमबीबीएस की मान्यता बढ़कर 100 सीट हो जाने से न? सिर्फ पूर्वांचल के प्रतिभाशाली छात्र-छात्रों को अपने घर के पास गुणव?तापरक चिकित?सा शिक्षा उपल?ध होगी बल्कि गोरखपुर-बस?ती-आजमगढ़ मंडल से लेकर पश्चिमी बिहार और नेपाल की तराई तक के लोगों को अ?याधुनिक सुपरस?पेशलिटी सुविधाओं से लैस चौबीसों घंटे सेवा देने वाला अस्पताल भी मिल जाएगा।

जिला जज ने हत्या आरोपी की जमानत अर्जी की खारिज

स्वतंत्र चेतना गोरखपुर/विधि संवाददाता। हत्या के मामले में जनपद न्यायाधीश तेज प्रताप तिवारी ने गोरखनाथ थाना क्षेत्र के अहमद नगर चकसा हुसैन निवासी आरोपित बबलू शमीम की जमानत अर्जी अपराध की गंभीरता को देखते हुए खारिज कर दी है। अभियोजन पक्ष की ओर से जिला शासकीय अधिवक्ता शिवानंद सिंह का कहना था कि 6 जून 2024 को करीब 9 बजे के करीब वादी जमीर अहमद का लड़का जिशान अहमद घर के बाहर खड़ा था उसी समय आरोपित बबलू से वादी के लड़के से कुछ कहासुनी हो गई आस पास के लोगों ने दोनों को शांत कराकर घर भेज दिया आधे घंटे बाद आरोपित बबलू तथा उसका लड़का दो अज्ञात व्यक्तियों के साथ चाकू लेकर आए और वादी के लड़के जिशान अहमद को चाकू मारकर हत्या कर दी।

महायोगी गोरखनाथ विवि को अब एमबीबीएस की 100 सीटों की मान्यता

'नीट स्टेट कोटा की प्रथम काउंसिलिंग में पहले मिली मान्यता की सभी 50 सीटों पर हो चुका है प्रवेश'

संवाददाता

गोरखपुर, 1 अक्टूबर। गोरखपुर में निजी क्षेत्र के पहले विश्वविद्यालय महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के मेडिकल कॉलेज (श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) को नेशनल मेडिकल कमीशन से अब एमबीबीएस पाठ्यक्रम के लिए 100 सीटों की मान्यता मिल गई है। इसके पहले नेशनल मेडिकल कमीशन (एनएमसी) ने 50 सीटों की मान्यता दी थी और नीट स्टेट कोटा काउंसिलिंग में अब तक इन सभी सीटों पर प्रवेश हो चुका है। श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर की अपील पर जांचोपरांत एनएमसी ने अब एमबीबीएस की मान्यता बढ़ाकर 100 सीटों के लिए कर दी है। यह जानकारी देते हुए श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) अरविंद कुशवाहा ने बताया कि जल्द ही बढ़ी 50 सीटों पर भी प्रवेश प्रक्रिया नीट काउंसिलिंग से शुरू हो जाएगी।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय द्वारा की गई अपील के परीक्षण में एनएमसी ने पाया कि 100 एमबीबीएस सीटों के लिए जरूरी 420 बेड के हॉस्पिटल के सापेक्ष 450 बेड का हॉस्पिटल क्रियाशील है। साथ ही अन्य सभी आवश्यक इंफ्रास्ट्रक्चर, फैकल्टी भी मानक के अनुरूप हैं। इसे देखते हुए 30 सितंबर को अपील को इस आदेश के साथ के साथ निस्तारित किया गया कि श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर को सत्र 2024-25 के लिए एमबीबीएस की 100 सीटों पर मान्यता प्रदान की जाती है।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय को एमबीबीएस कोर्स संचालन को लेकर यह बड़ी उपलब्धि विश्वविद्यालय स्थापना के मात्र तीन साल में हासिल हुई है। नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी के तमाम रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के साथ ही यहां गुरु श्री गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के अंतर्गत 2021 से ही बीएएमएस का पाठ्यक्रम संचालित है। एमबीबीएस की मान्यता बढ़कर 100 सीटों पर पहुंचने पर विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने विश्वविद्यालय परिवार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोगों को बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में यह समूचे पूर्वांचल के युवाओं के लिए बड़ी सौगात है।

कुलपति ने बताया कि इस मेडिकल कॉलेज का हॉस्पिटल आने वाले समय में अपग्रेड होकर 1800 बेड का अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त हो जाएगा। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा महायोगी गुरु गोरखनाथ विश्वविद्यालय में स्थापित यह मेडिकल कॉलेज गोरक्षपीठाधीश्वर एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का ड्रीम प्रोजेक्ट भी है। श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) अरविंद कुशवाहा के अनुसार पहले वर्ष इस मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की 50 सीटों पर प्रवेश प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। अब मान्यता वृद्धि की 50 सीटों पर प्रवेश लिया जाएगा। एमबीबीएस की मान्यता बढ़कर 100 सीट हो जाने से न सिर्फ पूर्वांचल के प्रतिभाशाली छात्र-छात्रों को अपने घर के पास गुणवत्तापरक चिकित्सा शिक्षा उपलब्ध होगी बल्कि गोरखपुर-बस्ती-आजमगढ़ मंडल से लेकर पश्चिमी बिहार और नेपाल की तराई तक के लोगों को अत्याधुनिक सुपरस्पेशलिटी सुविधाओं से लैस चौबीसों घंटे सेवा देने वाला अस्पताल भी मिल जाएगा। विश्वविद्यालय की इस उपलब्धि पर गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. यूपी सिंह सहित सभी सदस्यों, भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह आदि ने प्रसन्नता व्यक्त की है।

एमबीबीएस पाठ्यक्रम के लिए विवि को मिली सौ सीटों की मान्यता

गोरखनाथ विवि में दो गुनी हो गईं एमबीबीएस की सीटें

खुशखबरी

- जल्द ही बढ़ी 50 सीटों पर भी नीट काउंसिलिंग से शुरू होगी प्रवेश प्रक्रिया
- नीट की प्रथम काउंसिलिंग में पहले मिली मान्यता की सभी 50 सीटों पर हो चुका है प्रवेश

गोरखपुर। वरिष्ठ संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम के मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की सीटें दोगुनी हो गई हैं। विवि के श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर को नेशनल मेडिकल कमीशन (एनएमसी) से अब एमबीबीएस पाठ्यक्रम के लिए 100 सीटों की मान्यता मिल गई है। इसके पहले एनएमसी ने 50 सीटों की मान्यता दी थी। नीट स्टेट कोटा काउंसिलिंग में अब तक इन सभी सीटों पर प्रवेश हो चुका है। श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर की अपील पर जांच के बाद एनएमसी ने अब एमबीबीएस की मान्यता बढ़ाकर 100 सीटों के लिए कर दी है। श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) अरविंद कुशवाहा ने बताया कि जल्द ही बढ़ी 50 सीटों पर भी प्रवेश प्रक्रिया नीट काउंसिलिंग से शुरू हो जाएगी।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय द्वारा की गई अपील के परीक्षण में एनएमसी ने पाया कि 100 एमबीबीएस सीटों के लिए जरूरी 420 बेड के हॉस्पिटल के सापेक्ष 450 बेड का हॉस्पिटल क्रियाशील है। साथ ही अन्य सभी आवश्यक इंफ्रास्ट्रक्चर, फैकल्टी भी मानक के अनुरूप हैं। इसे देखते हुए 30 सितंबर को सत्र 2024-25 के लिए एमबीबीएस की 100 सीटों पर मान्यता प्रदान कर दी गई।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय को एमबीबीएस कोर्स संचालन को लेकर यह बड़ी उपलब्धि विश्वविद्यालय स्थापना के मात्र तीन साल में हासिल हुई है। नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी के तमाम रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के साथ ही यहां गुरु श्री गोरखनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के अंतर्गत 2021 से ही बीएएमएस का पाठ्यक्रम संचालित है। एमबीबीएस की मान्यता बढ़कर 100 सीटों पर पहुंचने पर विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने कहा कि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में यह समूचे पूर्वांचल के युवाओं के लिए बड़ी सौगात है।

कुलपति ने बताया कि मेडिकल कॉलेज का हॉस्पिटल आने वाले समय में अपग्रेड होकर अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त 1800 बेड का हो जाएगा। विश्वविद्यालय की इस उपलब्धि पर गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. यूपी सिंह सहित सभी सदस्यों, भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह आदि ने प्रसन्नता व्यक्त की है।

अब 100 सीटों पर एमबीबीएस की पढ़ाई

नेशनल मेडिकल एसोसिएशन से मिली 50 और सीटों की मान्यता, होगी काउंसिलिंग

गोरखनाथ विश्वविद्यालय

- आवश्यक आधारिक संरचना और फैकल्टी मिली मानक के अनुरूप
- 50 सीट पर पहली काउंसिलिंग में ही विश्वविद्यालय ले चुका है प्रवेश

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कालेज हास्पिटल एंड रिसर्च सेंटर को नेशनल मेडिकल कमीशन से अब एमबीबीएस पाठ्यक्रम के लिए 50 और सीट की मान्यता मिल गई है। 50 सीट की मान्यता पहले ही मिल चुकी है, जिस पर नीट स्टेट काउंसिलिंग के जरिये प्रवेश हो चुका है। इसे लेकर अब कालेज में 100 सीटों पर एमबीबीएस की पढ़ाई होगी। जानकारी देते हुए कालेज के प्राचार्य प्रो. अरविंद कुशवाहा ने बताया कि जल्द ही बढ़ी हुई 50 सीटों पर प्रवेश के लिए नीट के जरिये काउंसिलिंग शुरू कर दी जाएगी।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय की ओर से सीट बढ़ाने को लेकर की गई अपील के परीक्षण में नेशनल मेडिकल कमीशन ने पाया कि 100 एमबीबीएस सीटों के लिए जरूरी

श्रीगोरक्षनाथ मेडिकल कालेज हास्पिटल एंड रिसर्च सेंटर • जागरण फोटो

420 बेड के हास्पिटल के सापेक्ष 450 बेड का हास्पिटल क्रियाशील है। साथ ही अन्य सभी आवश्यक आधारिक संरचना और फैकल्टी भी मानक के अनुरूप हैं। इसे देखते हुए 30 सितंबर को अपील को इस आदेश के साथ निस्तारित किया गया कि कालेज को सत्र 2024-25 के लिए एमबीबीएस की 100 सीटों पर मान्यता प्रदान की जाती है।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय को एमबीबीएस कोर्स संचालन को लेकर यह बड़ी उपलब्धि विश्वविद्यालय स्थापना के मात्र तीन साल में हासिल हुई है। नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी के तमाम रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के साथ ही गुरु श्री गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज के अंतर्गत 2021 से ही बीएएमएस का पाठ्यक्रम संचालित है। एमबीबीएस की मान्यता बढ़कर 100 सीटों तक पहुंचने पर विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डा. अतुल वाजपेयी ने विश्वविद्यालय परिवार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोगों को बधाई देते हुए कहा कि कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में यह समूचे पूर्वांचल के युवाओं के लिए बड़ी सौगात है।

कुलपति ने बताया कि इस मेडिकल कालेज का हास्पिटल आने वाले समय में अपग्रेड होकर 1800 बेड का अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त हास्पिटल हो जाएगा। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा महायोगी गुरु गोरखनाथ विश्वविद्यालय में स्थापित यह मेडिकल कालेज मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का ड्रीम प्रोजेक्ट है। कालेज प्राचार्य प्रो. अरविंद कुशवाहा ने कहा कि एमबीबीएस की 100 सीट हो जाने से न सिर्फ पूर्वांचल के प्रतिभाशाली छात्र-छात्रों को अपने घर के पास गुणवत्तापरक चिकित्सा शिक्षा उपलब्ध होगी बल्कि गोरखपुर-बस्ती-आजमगढ़ मंडल से लेकर पश्चिमी बिहार और नेपाल की तराई तक के लोगों को अत्याधुनिक सुपर स्पेशलिटी सुविधाओं से लैस चौबीस घंटे सेवा देने वाला अस्पताल भी मिल जाएगा। विश्वविद्यालय की इस उपलब्धि पर गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. यूपी सिंह सहित सभी सदस्यों, भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डा जीएन सिंह आदि ने खुशी जाहिर की है।

महायोगी गोरखनाथ विवि को अब एमबीबीएस की 100 सीटों की मान्यता

कार्यालय प्रतिनिधि

गोरखपुर,1 अक्टूबर। गोरखपुर में निजी क्षेत्र के पहले विश्वविद्यालय महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के मेडिकल कॉलेज (श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) को नेशनल मेडिकल कमीशन से अब एमबीबीएस पाठ्यक्रम के लिए 100 सीटों की मान्यता मिल गई है। इसके पहले नेशनल मेडिकल कमीशन (एनएमसी) ने 50 सीटों की मान्यता दी थी और नीट स्टेट कोटा काउंसिलिंग में अब तक इन सभी सीटों पर प्रवेश हो चुका है। श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर की अपील पर जांचोपरांत एनएमसी ने अब एमबीबीएस की मान्यता बढ़ाकर 100 सीटों के लिए कर दी है। यह जानकारी देते हुए श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) अरविंद कुशवाहा ने बताया कि जल्द ही बढ़ी 50 सीटों पर भी प्रवेश प्रक्रिया नीट काउंसिलिंग से शुरू हो जाएगी।महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय द्वारा की गई अपील के परीक्षण में एनएमसी ने पाया कि 100 एमबीबीएस सीटों के लिए जरूरी 420 बेड के हॉस्पिटल के सापेक्ष 450 बेड का हॉस्पिटल क्रियाशील है। साथ ही अन्य सभी आवश्यक इंफ्रास्ट्रक्चर, फैकल्टी भी मानक के अनुरूप हैं। इसे देखते हुए 30 सितंबर को अपील को इस आदेश के साथ के साथ निस्तारित किया गया कि श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर को सत्र 2024-25 के लिए एमबीबीएस की 100 सीटों पर मान्यता प्रदान की जाती है। कुलपति ने बताया कि इस मेडिकल कॉलेज का हॉस्पिटल आने वाले समय में अपग्रेड होकर 1800 बेड का अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त हो जाएगा। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा महायोगी गुरु गोरखनाथ विश्वविद्यालय में स्थापित यह मेडिकल कॉलेज गोरक्षपीठाधीश्वर एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का ड्रीम प्रोजेक्ट भी है।

❖ नीट स्टेट कोटा की प्रथम काउंसिलिंग में पहले मिली मान्यता की सभी 50 सीटों पर हो चुका है प्रवेश

समाचार दर्पण

गोरखनाथ यूनिवर्सिटी में 100 एमबीबीएस सीटों की मान्यता

i SPECIAL

पहली काउंसिलिंग में मिली मान्यता की सभी 50 सीटों पर हो चुका है प्रवेश

gorakhpur@inext.co.in

GORAKHPUR (1 Oct): गोरखपुर में निजी क्षेत्र के पहले विश्वविद्यालय महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय

के मेडिकल कॉलेज (श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) को नेशनल मेडिकल कमीशन से अब एमबीबीएस कोर्स के लिए 100 सीटों की मान्यता मिल गई है. इसके पहले नेशनल मेडिकल कमीशन (एनएमसी) ने 50 सीटों की मान्यता दी थी और नीट स्टेट कोटा काउंसिलिंग में अब तक इन सभी सीटों पर प्रवेश हो चुका है.

काउंसिलिंग से प्रवेश

श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर की अपील पर जांचोपरांत एनएमसी ने अब एमबीबीएस की मान्यता बढ़ाकर 100 सीटों के लिए कर दी है. यह जानकारी देते हुए श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) अरविंद कुशवाहा ने बताया कि जल्द ही बढ़ी 50 सीटों पर भी प्रवेश प्रक्रिया नीट काउंसिलिंग से शुरू हो जाएगी.

हॉस्पिटल में 450 बेड

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय द्वारा की गई अपील के परीक्षण में एनएमसी ने पाया कि 100 एमबीबीएस सीटों के लिए जरूरी 420 बेड के हॉस्पिटल के सापेक्ष 450 बेड का हॉस्पिटल क्रियाशील है. साथ ही अन्य सभी आवश्यक इंफ्रास्ट्रक्चर, फैकल्टी भी मानक के अनुरूप हैं. इसे देखते हुए 30 सितंबर को अपील को इस आदेश के साथ के साथ निस्तारित किया गया कि श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर को सत्र 2024-25 के लिए एमबीबीएस की 100 सीटों पर मान्यता प्रदान की जाती है.

युवाओं के लिए सौगात

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय को एमबीबीएस कोर्स संचालन को लेकर यह बड़ी उपलब्धि विश्वविद्यालय स्थापना के मात्र तीन साल में हासिल हुई है. नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी के तमाम रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के साथ ही यहां गुरु श्री गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के अंतर्गत 2021 से ही बीएएमएस का पाठ्यक्रम संचालित है. एमबीबीएस की मान्यता बढ़कर 100 सीटों पर पहुंचने पर विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने विश्वविद्यालय परिवार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोगों को बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में यह समूचे पूर्वांचल के युवाओं के लिए बड़ी सौगात है.

महायोगी गोरखनाथ विवि को अब एमबीबीएस की 100 सीटों की मान्यता

लोक भारती न्यूज ब्यूरो

गोरखपुर, 1 अक्टूबर। गोरखपुर में निजी क्षेत्र के पहले विश्वविद्यालय महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के मेडिकल कॉलेज (श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) को नेशनल मेडिकल कमीशन से अब एमबीबीएस पाठ्यक्रम के लिए 100 सीटों की मान्यता मिल गई है। इसके पहले नेशनल मेडिकल कमीशन (एनएमसी) ने 50 सीटों की मान्यता दी थी और नीट स्टेट कोटा काउंसिलिंग में अब तक इन सभी सीटों पर प्रवेश हो चुका है। श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर की अपील पर जांचोपरांत एनएमसी ने अब एमबीबीएस की मान्यता बढ़ाकर 100 सीटों के लिए कर दी है। यह जानकारी देते हुए श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) अरविंद हो जाएगी।महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय द्वारा की गई अपील के परीक्षण में एनएमसी ने पाया कि 100 एमबीबीएस सीटों के लिए जरूरी 420 बेड के हॉस्पिटल के सापेक्ष 450 बेड का हॉस्पिटल क्रियाशील है। साथ ही अन्य सभी आवश्यक इंफास्ट्रक्चर, फैकल्टी भी मानक के अनुरूप हैं। इसे देखते हुए 30 सितंबर को अपील को इस आदेश के साथ के साथ निस्तारित किया गया कि श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर को सत्र 2024-25 के लिए एमबीबीएस की 100 सीटों पर मान्यता प्रदान उपलब्धि विश्वविद्यालय स्थापना के मात्र तीन साल में हासिल हुई है। नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी के तमाम रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के साथ ही यहां गुरु श्री गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के अंतर्गत 2021 से ही बीएएमएस का पाठ्यक्रम संचालित है। एमबीबीएस की मान्यता बढ़कर 100 सीटों पर पहुंचने पर विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने विश्वविद्यालय परिवार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोगों को बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय को अब एमबीबीएस की 100 सीटों की मान्यता

निष्पक्ष प्रतिदिन। गोरखपुर

- नीट स्टेट कोटा की प्रथम काउंसिलिंग में पहले मिली मान्यता की सभी 50 सीटों पर हो चुका है प्रवेश

गोरखपुर में निजी क्षेत्र के पहले विश्वविद्यालय महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के मेडिकल कॉलेज (श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) को नेशनल मेडिकल कमीशन से अब एमबीबीएस पाठ्यक्रम के लिए 100 सीटों की मान्यता मिल गई है। इसके पहले नेशनल मेडिकल कमीशन (एनएमसी) ने 50 सीटों की मान्यता दी थी और नीट स्टेट कोटा काउंसिलिंग में अब तक इन सभी सीटों पर प्रवेश हो चुका है।

श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर की अपील पर जांचोपरांत एनएमसी ने अब एमबीबीएस की मान्यता बढ़ाकर 100 सीटों के लिए कर दी है। यह जानकारी देते हुए श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) अरविंद कुशवाहा ने बताया कि जल्द ही बढ़ी 50 सीटों पर भी प्रवेश प्रक्रिया नीट काउंसिलिंग से शुरू हो जाएगी। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय द्वारा की गई अपील के परीक्षण में एनएमसी ने पाया कि 100 एमबीबीएस सीटों के लिए जरूरी 420 बेड के हॉस्पिटल के सापेक्ष 450 बेड का हॉस्पिटल क्रियाशील है। साथ ही अन्य सभी आवश्यक इंफ्रास्ट्रक्चर, फैकल्टी भी मानक के अनुरूप हैं। इसे देखते हुए 30 सितंबर को अपील को इस आदेश के साथ के साथ निस्तारित किया गया कि श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर को सत्र 2024-25 के लिए एमबीबीएस की 100 सीटों पर मान्यता प्रदान की जाती है। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय को एमबीबीएस कोर्स संचालन को लेकर यह बड़ी उपलब्धि विश्वविद्यालय स्थापना के मात्र तीन साल में हासिल हुई है। नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी के तमाम रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के साथ ही यहां गुरु श्री गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के अंतर्गत 2021 से ही बीएएमएस का पाठ्यक्रम संचालित है। एमबीबीएस की मान्यता बढ़कर 100 सीटों पर पहुंचने पर विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने विश्वविद्यालय परिवार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोगों को बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में यह समूचे पूर्वांचल के युवाओं के लिए बड़ी सौगात है। कुलपति ने बताया कि इस मेडिकल कॉलेज का हॉस्पिटल आने वाले समय में अपग्रेड होकर 1800 बेड का अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त हो जाएगा। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा महायोगी गुरु गोरखनाथ विश्वविद्यालय में स्थापित यह मेडिकल कॉलेज गोरक्षपीठाधीश्वर एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का ड्रीम प्रोजेक्ट भी है। श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) अरविंद कुशवाहा के अनुसार पहले वर्ष इस मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की 50 सीटों पर प्रवेश प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। अब मान्यता वृद्धि की 50 सीटों पर प्रवेश लिया जाएगा। एमबीबीएस की मान्यता बढ़कर 100 सीट हो जाने से न सिर्फ पूर्वांचल के प्रतिभाशाली छात्र-छात्रों को अपने घर के पास गुणवत्तापरक चिकित्सा शिक्षा उपलब्ध होगी बल्कि गोरखपुर-बस्ती-आजमगढ़ मंडल से लेकर पश्चिमी बिहार और नेपाल की तराई तक के लोगों को अत्याधुनिक सुपरस्पेशलिटी सुविधाओं से लैस चौबीसों घंटे सेवा देने वाला अस्पताल भी मिल जाएगा। विश्वविद्यालय की इस उपलब्धि पर गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. यूपी सिंह सहित सभी सदस्यों, भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह आदि ने प्रसन्नता व्यक्त की है।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में अब एमबीबीएस की 100 सीटें

नेशनल मेडिकल कमीशन ने एमबीबीएस में 50 सीटें और बढ़ाने के दिए निर्देश, पहले मिली थी 50 सीटों की मान्यता

अमर उजाला ब्यूरो

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के मेडिकल कॉलेज (श्रीगोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) में अब एमबीबीएस की 100 सीटों पर प्रवेश होगा। नेशनल मेडिकल कमीशन (एनएमसी) ने 50 सीट की मान्यता को बढ़ाकर 100 कर दिया है।

पहले मिली सभी सीटों पर नीट स्टेट कोटा काउंसिलिंग के जरिए प्रवेश दिया जा चुका है। जल्द ही बढ़ी हुई 50 सीटों पर प्रवेश प्रक्रिया नीट काउंसिलिंग से शुरू हो जाएगी।

100
सीटें हुईं। 50 बढ़ी हुई सीटों पर जल्द शुरू होगी प्रवेश की प्रक्रिया

श्रीगोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर की अपील पर जांच के बाद एनएमसी ने अब एमबीबीएस की मान्यता बढ़ाकर 100 सीटों के लिए कर दी है। यह जानकारी देते हुए श्रीगोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) अरविंद कुशवाहा ने बताया कि एनएमसी ने पाया कि 100 एमबीबीएस सीटों के लिए जरूरी 420 बेड के हॉस्पिटल के सापेक्ष 450 बेड का हॉस्पिटल क्रियाशील है। साथ ही अन्य सभी आवश्यक इंफ्रास्ट्रक्चर, फैकल्टी भी मानक के अनुरूप हैं।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस पाठ्यक्रम के लिए 100 सीटों की मिली मान्यता। संवाद

विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने बताया कि मेडिकल कॉलेज का हॉस्पिटल आने वाले समय में अपग्रेड होकर 1800 बेड का हो जाएगा। गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. यूपी सिंह, पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह आदि ने प्रसन्नता जताई है।

मिली एमबीबीएस की 50 और सीटों की मान्यता

गोरखपुर (एसएनबी)। गोरखपुर में निजी क्षेत्र के पहले विश्वविद्यालय महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम के मेडिकल कालेज (श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कालेज हास्पिटल एंड रिसर्च सेंटर) को नेशनल मेडिकल कमीशन से अब एमबीबीएस पाठ्यक्रम के लिए 100 सीटों की मान्यता दे दी है। इसके पहले नेशनल मेडिकल

श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कालेज हास्पिटल एंड रिसर्च सेंटर

- नीट स्टेट कोटा की प्रथम काउंसिलिंग में पहले मिली मान्यता की सभी 50 सीटों पर हो चुका है प्रवेश

कमीशन (एनएमसी) ने 50 सीटों की मान्यता दी थी और नीट स्टेट कोटा काउंसिलिंग में अब तक इन सभी सीटों पर प्रवेश हो चुका है। श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कालेज हास्पिटल एंड रिसर्च सेंटर की अपील पर जांचोपरांत एनएमसी ने अब एमबीबीएस की मान्यता 50 से बढ़ाकर 100 सीटों के लिए कर दी है।

यह जानकारी श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कालेज हास्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य डा. अरविंद कुशवाहा ने दी। उन्होंने बताया कि जल्द ही बढ़ी 50 सीटों पर भी प्रवेश प्रक्रिया नीट काउंसिलिंग से शुरू हो जाएगी। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय द्वारा की गई अपील के परीक्षण में एनएमसी ने पाया कि 100 एमबीबीएस सीटों के लिए जरूरी 420 बेड के हास्पिटल के सापेक्ष 450 बेड का हास्पिटल क्रियाशील है। साथ ही अन्य सभी आवश्यक इंफ्रास्ट्रक्चर, फैकल्टी भी मानक के अनुरूप है। इसे देखते हुए 30 सितंबर को अपील को इस आदेश के साथ के साथ निस्तारित किया गया कि श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कालेज हास्पिटल एंड रिसर्च सेंटर को सत्र 2024-25 के लिए एमबीबीएस की 100 सीटों पर मान्यता प्रदान की जाती है। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय को एमबीबीएस कोर्स संचालन को लेकर यह बड़ी उपलब्धि विश्वविद्यालय स्थापना के मात्र तीन साल में हासिल हुई है। नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी के तमाम रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के साथ ही यहां गुरु श्री गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज के अंतर्गत 2021 से ही बीएएमएस का पाठ्यक्रम संचालित है। एमबीबीएस की मान्यता बढ़कर 100 सीटों पर पहुंचने पर

विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डा. अतुल वाजपेयी ने विश्वविद्यालय परिवार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोगों को बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में यह समूचे पूर्वांचल के युवाओं के लिए यह बड़ी सौगात है। कुलपति डा. वाजपेयी ने बताया कि इस मेडिकल कालेज का हास्पिटल आने वाले समय में अपग्रेड होकर 1800 बेड का अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त हो जाएगा। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा महायोगी गुरु गोरखनाथ विश्वविद्यालय में स्थापित यह मेडिकल कालेज गोरक्षपीठाधीश्वर एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का ड्रीम प्रोजेक्ट भी है। श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कालेज हास्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य डा. कुशवाहा के अनुसार पहले वर्ष इस मेडिकल कालेज में एमबीबीएस की 50 सीटों पर प्रवेश प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। अब मान्यता वृद्धि की 50 सीटों पर प्रवेश लिया जाएगा। एमबीबीएस की मान्यता बढ़कर 100 सीट हो जाने से न सिर्फ पूर्वांचल के प्रतिभाशाली छात्र-छात्रों को अपने घर के पास गुणवत्तापरक चिकित्सा शिक्षा उपलब्ध होगी बल्कि गोरखपुर-बस्ती-आजमगढ़ मंडल से लेकर पश्चिमी बिहार और नेपाल की तराई तक के लोगों को अत्याधुनिक सुपरस्पेशलिटी सुविधाओं से लैस चौबीसों घंटे सेवा देने वाला अस्पताल भी मिल जाएगा।

Gorakhnath University gets approval for 100 MBBS seats

Gorakhpur: Mahayogi Gorakhnath University has received approval from the National Medical Commission (NMC) for 100 MBBS seats at its medical college Shri Gorakhnath Medical College Hospital and Research Centre.

Previously, NMC had approved 50 MBBS seats, all of which have been filled through NEET state quota counselling. Following a review, the NMC has now increased the number of approved seats to 100, said Shri Gorakhnath Medical College Hospital and Research Center Principal Prof Arvind Kushwaha, adding that the admission process for the additional 50 seats will soon commence through NEET counselling.

In response to Mahayogi Gorakhnath University's appeal, the NMC found that the hospital, with its 450 operational beds, exceeds the 420-bed requirement for 100 MBBS seats. Along with adequate faculty and infrastructure, the NMC on Sept 30 granted approval, confirming 100 MBBS seats for the 2024-25 academic session.

In addition to MBBS, the university has been running a BAMS programme under Guru Shri Gorakhnath Institute of Medical Sciences since 2021, along with several job-oriented courses in nursing, paramedical, and pharmacy. University's Vice-Chancellor Major General Atul Vajpayee congratulated the university fraternity and said under the guidance of CM Yogi Adityanath, this is a great gift for the youth of the region. TNN

समाचार दर्पण

चार प्रमुख संस्थानों का शैक्षिक भ्रमण कर कृषि छात्रों ने अर्जित किया ज्ञान

गोरखपुर, 24 अक्टूबर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय के तृतीय वर्ष के छात्रों ने वाराणसी स्थित कृषि क्षेत्र के राष्ट्रीय महत्व के चार प्रमुख संस्थानों भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (इरी) व राष्ट्रीय बीज अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र का दो दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण किया। छात्रों ने भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान में शाकीय फसलों के अनुवांशिक सुधार, उत्पादन, सुरक्षा व प्रबंधन आदि महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी प्राप्त की व शोध की बारीकियों को समझा। इसी क्रम में इरी में भ्रमण को पहुंचे विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह ने कृषि को भारतीय अर्थव्यवस्था का रीढ़ बताते हुए कहा कि वर्तमान में विश्व की 60 प्रतिशत धान की किस्में इरी द्वारा विकसित की गई हैं। विद्यार्थियों ने इरी में उन्नत प्रयोगशालाएं, अत्याधुनिक फॉर्म मशीनरी, कम्प्यूट्रीकृत जीव विज्ञान प्रयोगशाला और मृदा परीक्षण प्रयोगशाला का अवलोकन किया व उनके संचालन की विधि को समझा। विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय बीज अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र में बीज स्वास्थ्य परीक्षण, डीएनए फिंगरप्रिंटिंग, बीज संग्रहालय इत्यादि के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

गोरखनाथ विवि के छात्रों ने प्रमुख संस्थानों का किया भ्रमण

(संवाददाता)

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय के तृतीय वर्ष के छात्रों ने वाराणसी स्थित कृषि क्षेत्र के राष्ट्रीय महत्व के चार प्रमुख संस्थानों भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (इरी) व राष्ट्रीय बीज अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र का दो दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण किया।

छात्रों ने भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान में शाकीय फसलों के अनुवांशिक सुधार, उत्पादन, सुरक्षा व प्रबंधन आदि महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी प्राप्त की व शोध की बारीकियों को समझा। इसी क्रम में इरी में भ्रमण को पहुंचे विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह ने कृषि को भारतीय अर्थव्यवस्था का रीढ़ बताते हुए कहा कि वर्तमान में विश्व की 60 प्रतिशत ध ान की किस्में इरी द्वारा विकसित की गई हैं। विद्यार्थियों ने इरी में उन्नत प्रयोगशालाएं, अत्याधुनिक फॉर्म मशीनरी, कम्प्यूट्रीकृत जीव विज्ञान प्रयोगशाला और मृदा परीक्षण प्रयोगशाला का अवलोकन किया व उनके संचालन की विधि को समझा। विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय बीज अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र में बीज स्वास्थ्य परीक्षण, डीएनए फिंगरप्रिंटिंग, बीज संग्रहालय इत्यादि के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की। यह शैक्षणिक भ्रमण अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. विमल कुमार दुबे के निर्देशन में डॉ. नवनीत कुमार सिंह, डॉ. सास्वती प्रेमकुमारी, डॉ. डीआर भारद्वाज, डॉ. आशीष कुमार श्रीवास्तव, डॉ कृति, डॉ. राहुल के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

महायोगी गोरखनाथ विवि के छात्रों ने किया शैक्षिक भ्रमण

गोरखपुर (एसएनबी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय के तृतीय वर्ष के छात्रों ने वाराणसी स्थित कृषि क्षेत्र के राष्ट्रीय महत्व के चार प्रमुख संस्थानों भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (इरी) व राष्ट्रीय बीज अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र का दो दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण किया।

■ वाराणसी स्थित कृषि क्षेत्र के राष्ट्रीय महत्व के चार प्रमुख संस्थान पहुंचे छात्रों ने ली जानकारी

विवि के छात्रों ने भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान में शाकीय फसलों के अनुवांशिक सुधार, उत्पादन, सुरक्षा व प्रबंधन आदि महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी प्राप्त की व शोध की बारीकियों को समझा। इसी क्रम में इरी में भ्रमण को पहुंचे छात्रों का स्वागत करते हुए निदेशक डा. सुधांशु सिंह ने कृषि को भारतीय अर्थव्यवस्था का रीढ़ बताते हुए कहा कि वर्तमान में विश्व की 60 प्रतिशत धान की किस्में इरी द्वारा विकसित की गई हैं। छात्रों ने इरी में उन्नत प्रयोगशालाएं, अत्याधुनिक फर्म मशीनरी, कम्प्यूट्रीत जीव विज्ञान प्रयोगशाला और मृदा परीक्षण प्रयोगशाला का अवलोकन किया व उनके संचालन की विधि को समझा। छात्रों ने राष्ट्रीय बीज अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र में बीज स्वास्थ्य परीक्षण, डीएनए फिंगर प्रिंटिंग, बीज संग्रहालय इत्यादि के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की। यह शैक्षणिक भ्रमण अधिष्ठाता कृषि संकाय डा. विमल कुमार दुबे के निर्देशन में डा. नवनीत कुमार सिंह, डा. सास्वती प्रेमकुमारी, डा. डीआर भारद्वाज, डा. आशीष कुमार श्रीवास्तव, डा. कृति एवं डा. राहुल के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

चार प्रमुख संस्थानों का शैक्षिक भ्रमण किया महायोगी गोरखनाथ विवि के छात्रों ने

संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय के तृतीय वर्ष के छात्रों ने वाराणसी स्थित कृषि क्षेत्र के राष्ट्रीय महत्व के चार प्रमुख संस्थानों भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (इरी) व राष्ट्रीय बीज अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र का दो दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण किया। छात्रों ने भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान में शाकीय फसलों के अनुवांशिक सुधार, उत्पादन, सुरक्षा व प्रबंधन आदि महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी प्राप्त की व शोध की बारीकियों को समझा। इसी क्रम में इरी में भ्रमण को पहुंचे विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह ने कृषि को भारतीय अर्थव्यवस्था का रीढ़ बताते हुए कहा कि वर्तमान में विश्व की 60 प्रतिशत धान की किस्में इरी द्वारा विकसित की गई हैं। विद्यार्थियों ने इरी में उन्नत प्रयोगशालाएं, अत्याधुनिक फॉर्म मशीनरी, कम्प्यूट्रीकृत जीव विज्ञान प्रयोगशाला और मृदा परीक्षण प्रयोगशाला का अवलोकन किया व उनके संचालन की विधि को समझा। विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय बीज अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र में बीज स्वास्थ्य परीक्षण, डीएनए फिंगरप्रिंटिंग, बीज संग्रहालय इत्यादि के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की। यह शैक्षणिक भ्रमण अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. विमल कुमार दुबे के निर्देशन में डॉ. नवनीत कुमार सिंह, डॉ. सास्वती प्रेमकुमारी, डॉ. डीआर भारद्वाज, डॉ. आशीष कुमार श्रीवास्तव, डॉ कृति, डॉ. राहुल के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

महायोगी गोरक्षनाथ विश्वविद्यालय

छात्रों ने किया चार प्रमुख संस्थानों का शैक्षिक भ्रमण

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कृषि संकाय के तृतीय वर्ष के छात्रों ने वाराणसी स्थित कृषि क्षेत्र के राष्ट्रीय महत्व के चार प्रमुख संस्थानों भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (इरी) व राष्ट्रीय बीज अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र का दो दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण किया।

छात्रों ने भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान में शाकीय फसलों के अनुवांशिक सुधार, उत्पादन, सुरक्षा व प्रबंधन आदि महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी प्राप्त की व शोध की बारीकियों को समझा।

इसी क्रम में इरी में भ्रमण को पहुंचे विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह ने कृषि को भारतीय अर्थव्यवस्था का रीढ़ बताते हुए कहा कि वर्तमान में विश्व की 60 प्रतिशत धान की किस्में इरी द्वारा विकसित की गई हैं। विद्यार्थियों ने इरी में उन्नत प्रयोगशालाएं, अत्याधुनिक फॉर्म मशीनरी, कम्प्यूट्रीकृत जीव विज्ञान प्रयोगशाला और मृदा परीक्षण प्रयोगशाला का अवलोकन किया व उनके संचालन की विधि को समझा।

विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय बीज अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र में बीज स्वास्थ्य परीक्षण, डीएनए फिंगरप्रिंटिंग, बीज संग्रहालय इत्यादि के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

यह शैक्षणिक भ्रमण अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. विमल कुमार दुबे के निर्देशन में डॉ. नवनीत कुमार सिंह, डॉ. सास्वती प्रेमकुमारी, डॉ. डीआर भारद्वाज, डॉ. आशीष कुमार श्रीवास्तव, डॉ कृति, डॉ. राहुल के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

समाचार दर्पण

रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में आयोजित हितायु कार्यक्रम में बोलते आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एके सिंह। • हिन्दुस्तान

विशिष्ट बीमारियों पर निरंतर अनुसंधान करें वैद्य : प्रो. सिंह

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में आयुर्वेद से परिभाषित जीवनशैली पर केंद्रित हितायु-2024 विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ रविवार को हुआ। उद्घाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एके सिंह ने कहा कि प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद आज भी न केवल प्रासंगिक है बल्कि दुनिया में इसकी महत्ता फिर तेजी से बढ़ रही है। ऐसे में आयुर्वेद के वैद्यों की यह जिम्मेदारी बनती है कि वे विशिष्ट बीमारियों पर निरंतर अनुसंधान करें।

प्रो. एके सिंह ने कहा कि आयुर्वेद चिकित्सकों को खुद को गर्व से वैद्य कहना चाहिए। इससे अलग और विशिष्ट पहचान बनेगी। श्रेष्ठ वैद्य बनने के लिए अपना ज्ञानवर्धन करते रहना चाहिए। उन्होंने आयुर्वेद के अनुरूप आहार-विहार, ऋतुचर्या आदि की विस्तृत चर्चा करते हुए कहा कि इन्हें अपनाकर बीमारियों से बचा जा सकता।

राष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने कहा कि आयुर्वेद को कई देशों के लोगों द्वारा आरोग्यता प्राप्त करने के लिए अपनाया जा रहा है। आयुर्वेद के प्रति लोगों का विश्वास एक बार फिर तेजी से बढ़ रहा है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्रिंसिपल डॉ. अरविंद कुशवाहा प्रधानाचार्य ने कहा कि प्राचीन चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद की इस राष्ट्रीय संगोष्ठी से निकले निष्कर्ष दूरगामी प्रभाव डालेंगे।

वैज्ञानिक सत्र में हुई आयुर्वेद के विविध आयामों पर चर्चा

संगोष्ठी के पहले दिन पहले सत्र में स्वास्थ्य सूचना विज्ञान, सार्वजनिक स्वास्थ्य और आयुर्वेद विषय पर मुख्य वक्ता रिसर्च एंड इनफॉरमेशन सिस्टम फॉर डेवलपिंग नेशन, नई दिल्ली के कंसल्टेंट डॉ. सरीन एनएस रहे। सत्र की अध्यक्षता डॉ. किरण कुमार रेड्डी एवं डॉ शांतिभूषण हांडूर ने की।

'विशिष्ट बीमारियों पर निरंतर अनुसंधान करें वैद्य'

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में आयुर्वेद पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी शुरु

अमर उजाला ब्यूरो

गोरखपुर। महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एके सिंह ने कहा कि प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद आज भी न केवल प्रासंगिक है, बल्कि दुनिया में इसकी महत्ता फिर तेजी से बढ़ रही है। ऐसे में वैद्यों की यह जिम्मेदारी बनती है कि वे विशिष्ट बीमारियों पर निरंतर अनुसंधान करें, ताकि हानिरहित इस चिकित्सा पद्धति का और विस्तार हो।

कुलपति प्रो. एके सिंह रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में आयुर्वेद से परिभाषित जीवन शैली पर केंद्रित 'हितायु-2024' विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के शुभारंभ अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

प्रो. एके सिंह ने कहा कि आयुर्वेद चिकित्सकों को खुद को गर्व से वैद्य कहना चाहिए। इससे अलग और विशिष्ट पहचान बनेगी। अध्यक्षता करते हुए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने कहा कि आयुर्वेद के प्रति लोगों का विश्वास एक बार फिर तेजी से बढ़ रहा है।

कार्यक्रम को विशिष्ट अतिथि श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्रिंसिपल डॉ. अरविंद कुशवाहा, गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के प्रिंसिपल डॉ. गिरधर वेदांतम आदि ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर डॉ रश्मि पुष्पन, डॉ. परीक्षित देवनाथ समेत कई शिक्षक, अलग-अलग जगहों से आए संगोष्ठी के प्रतिभागी और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

संबोधित करते महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एके सिंह व अन्य। स्रोत-विज्ञप्ति

आयुर्वेद के विविध आयामों पर हुई चर्चा

संगोष्ठी के पहले दिन वैज्ञानिक सत्र में आयुर्वेद के विविध आयामों पर चर्चा हुई। पहले सत्र में स्वास्थ्य सूचना विज्ञान, सार्वजनिक स्वास्थ्य और आयुर्वेद विषय पर मुख्य वक्ता रिसर्च एंड इनफॉरमेशन सिस्टम फॉर डेवलपिंग नेशन, नई दिल्ली के कंसल्टेंट डॉ. सरीन एनएस रहे। उन्होंने आयुष ग्रिड के बारे में बताया, जिसकी शुरुआत सीसीआईआरएस की ओर से की गई है। इसमें आयुष डाटा को भी सम्मिलित किया गया है। उन्होंने नमस्ते पोर्टल के बारे में बताया, जिसमें 2888 आयुर्वेद कोड हैं। इससे व्यक्ति के विभिन्न व्याधियों को आयुर्वेद के अनुसार पता किया जा सकता है। सत्र की अध्यक्षता डॉ. किरण कुमार रेड्डी एवं डॉ शांतिभूषण हांडूर ने की।

गंभीर बीमारियों पर निरंतर अनुसंधान करें वैद्य : प्रो. एके सिंह

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज में राष्ट्रीय संगोष्ठी

जागरण, सवांददाता,गोरखपुर : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज में आयुर्वेद से परिभाषित जीवन शैली पर केंद्रित 'हितायु-2024' विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ रविवार को हुआ। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एके सिंह ने कहा कि प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद आज भी न केवल प्रासंगिक है, बल्कि दुनिया में इसकी महत्ता तेजी से बढ़ रही है। ऐसे में आयुर्वेद के वैद्यों की यह जिम्मेदारी बनती है कि वे गंभीर बीमारियों पर निरंतर अनुसंधान करें, ताकि हानिरहित इस चिकित्सा पद्धति का और विस्तार हो।

प्रो. एके सिंह ने कहा कि आयुर्वेद चिकित्सकों को खुद को गर्व से वैद्य कहना चाहिए। इससे अलग और विशिष्ट पहचान बनेगी। श्रेष्ठ वैद्य बनने के लिए अपना ज्ञानवर्धन करते रहना चाहिए। उन्होंने आयुर्वेद के अनुरूप आहार, विहार, ऋतुचर्या की विस्तृत चर्चा की।

अध्यक्षता करते हुए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डा. अतुल वाजपेयी ने कहा कि आयुर्वेद को कई देशों के लोगों द्वारा आरोग्यता प्राप्त करने के लिए अपनाया जा रहा है। आयुर्वेद के प्रति लोगों का विश्वास एक बार फिर तेजी से बढ़ रहा है। विशिष्ट अतिथि श्रीगोरक्षनाथ मेडिकल कालेज, हास्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य डा. अरविंद कुशवाहा ने कहा कि इस संगोष्ठी से निकले निष्कर्ष दूरगामी प्रभाव डालेंगे। अतिथियों का स्वागत गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज के प्राचार्य डा. गिरधर वेदांतम ने किया। इस अवसर पर डा. रश्मि पुष्पन, डा. परीक्षित देवनाथ उपस्थित रहे।

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज में राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित करते गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एके सिंह • सौ. कालेज

वैज्ञानिक सत्र में हुई आयुर्वेद के विविध आयामों पर चर्चा

संगोष्ठी के पहले दिन वैज्ञानिक सत्र में आयुर्वेद के विविध आयामों पर चर्चा हुई। स्वास्थ्य सूचना विज्ञान, सार्वजनिक स्वास्थ्य और आयुर्वेद विषय पर मुख्य वक्ता रिसर्च एंड इन्फामेंशन सिस्टम फार डेवलपिंग नेशन, नई दिल्ली के कंसल्टेंट डा. सरीन एनएस रहे।

उन्होंने आयुष ग्रिड के बारे में चर्चा की। उन्होंने नमस्ते पोर्टल के बारे में बताया, जिसमें 2888 आयुर्वेद कोड हैं। इनसे व्यक्ति की विभिन्न व्याधियों का आयुर्वेद के अनुसार पता किया जा सकता है। अध्यक्षता डा. किरण कुमार रेड्डी एवं डा. शांतिभूषण हांडूर ने की। विज्ञप्ति

विशिष्ट बीमारियों पर निरंतर अनुसंधान करें वैद्य : प्रो. एके सिंह

- गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में आयुर्वेद पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'हितायु' का शुभारंभ
- खुद को वैद्य कहने में गर्व महसूस करें आयुर्वेद चिकित्सक

संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में आयुर्वेद से परिभाषित जीवन शैली पर केंद्रित हितायु-2024 विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ रविवार को हुआ। उद्घाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एके सिंह ने कहा कि प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद आज भी न केवल प्रासंगिक है बल्कि दुनिया में इसकी महत्ता फिर तेजी से बढ़ रही है। ऐसे में आयुर्वेद के वैद्यों की यह जिम्मेदारी बनती है कि वे विशिष्ट बीमारियों पर निरंतर अनुसंधान करें ताकि हानिरहित इस चिकित्सा पद्धति का और विस्तार हो सके। एके सिंह ने कहा कि आयुर्वेद चिकित्सकों को खुद को गर्व से वैद्य कहना चाहिए। इससे अलग और विशिष्ट पहचान बनेगी। श्रेष्ठ वैद्य बनने के लिए अपना ज्ञानवर्धन करते रहना चाहिए। उन्होंने आयुर्वेद के अनुरूप आहार, विहार, ऋतुचर्या आदि की विस्तृत चर्चा करते हुए कहा कि इन्हें अपनाकर बीमारियों से बचा जा सकता। प्रो. सिंह ने कहा कि किसी वैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग समाज के उद्धार के लिए किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने कहा कि आयुर्वेद को कई देशों के लोगों द्वारा आरोग्यता प्राप्त करने के लिए अपनाया जा रहा है। आयुर्वेद के प्रति लोगों का विश्वास एक बार फिर तेजी से बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि आज का दौर प्रतिस्पर्धा का है, इसलिए यह आवश्यक है कि वैद्य भी अपने ज्ञान क्षेत्र का सतत विस्तार करते रहें। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्रिंसिपल डॉ. अरविंद कुशवाहा प्रधानाचार्य ने कहा कि प्राचीन चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद की इस राष्ट्रीय संगोष्ठी से निकले निष्कर्ष दूरगामी प्रभाव डालेंगे। राष्ट्रीय संगोष्ठी में अतिथियों का स्वागत गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के प्रिंसिपल डॉ. गिरधर वेदांतम ने किया। इस अवसर पर डॉ रश्मि पुष्पन, डॉ. परीक्षित देवनाथ समेत कई शिक्षक, अलग-अलग जगहों से आए संगोष्ठी के प्रतिभागी और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

वैज्ञानिक सत्र में हुई आयुर्वेद के विविध आयामों पर चर्चा

संगोष्ठी के पहले दिन वैज्ञानिक सत्र में आयुर्वेद के विविध आयामों पर चर्चा हुई। पहले सत्र में स्वास्थ्य सूचना विज्ञान, सार्वजनिक स्वास्थ्य और आयुर्वेद विषय पर मुख्य वक्ता रिसर्च एंड इनफॉरमेशन सिस्टम फॉर डेवलपिंग नेशन, नई दिल्ली के कंसल्टेंट डॉ सरीन एनएस रहे। उन्होंने आयुष ग्रिड के बारे में बताया जिसकी शुरुआत सीसीआईआरएस द्वारा की गई है। जिसमें आयुष डाटा को भी सम्मिलित किया गया है। फिर उन्होंने नमस्ते पोर्टल के बारे में बताया जिसमें 2888 आयुर्वेद कोड हैं। जिससे व्यक्ति के विभिन्न व्याधियों को आयुर्वेद के अनुसार पता किया जा सकता है। सत्र की अध्यक्षता डॉ. किरण कुमार रेड्डी एवं डॉ शांतिभूषण हांडूर ने की।

बीमारियों पर निरंतर अनुसंधान करें वैद्य

गोरखपुर (एसएनबी)। महायोगी गोरखनाथ विवि के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज में आयुर्वेद से परिभाषित जीवन शैली पर केंद्रित 'हितायु-2024' विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ।

■ गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज में आयुर्वेद पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'हितायु' का हुआ शुभारंभ

उद्घाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विवि के कुलपति प्रो. एके सिंह ने कहा कि प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद आज भी न केवल प्रासंगिक है बल्कि दुनिया में इसकी महत्ता फिर तेजी से बढ़ रही है। ऐसे में आयुर्वेद के वैद्यों की यह जिम्मेदारी बनती है कि वे विशिष्ट बीमारियों पर निरंतर अनुसंधान करें ताकि हानि रहित इस चिकित्सा पद्धति का और विस्तार हो। प्रो. सिंह ने कहा कि आयुर्वेद चिकित्सकों को खुद को गर्व से वैद्य कहना चाहिए। इससे अलग और विशिष्ट पहचान बनेगी। श्रेष्ठ वैद्य बनने के लिए अपना ज्ञानवर्धन करते रहना चाहिए। उन्होंने आयुर्वेद के अनुरूप आहार, विहार, ऋतुचर्या आदि की विस्तृत चर्चा करते हुए कहा कि इन्हें अपनाकर बीमारियों से बचा जा सकता। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डा. अतुल वाजपेयी ने कहा कि आयुर्वेद को कई देशों के लोगों द्वारा आरोग्यता प्राप्त करने के लिए अपनाया जा रहा है। आयुर्वेद के प्रति लोगों का विश्वास एक बार फिर तेजी से बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि आज का दौर प्रतिस्पर्धा का है, इसलिए यह आवश्यक है कि वैद्य भी अपने ज्ञान क्षेत्र का सतत विस्तार करते रहें। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कालेज हस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्रधानाचार्य डा. अरविंद कुशवाहा ने कहा कि प्राचीन चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद की इस राष्ट्रीय संगोष्ठी से निकले निष्कर्ष दूरगामी प्रभाव डालेंगे। राष्ट्रीय संगोष्ठी में अतिथियों का स्वागत गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज के प्रधानाचार्य डा. गिरधर वेदांतम ने किया। इस अवसर पर डा. रश्मि पुष्पन, डा. परीक्षित देवनाथ समेत कई शिक्षक, अलग-अलग जगहों से आए संगोष्ठी के प्रतिभागी और छात्र उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित करते कुलपति प्रो.एके सिंह।

हुई आयुर्वेद के विविध आयामों पर चर्चा : संगोष्ठी के पहले दिन वैज्ञानिक सत्र में आयुर्वेद के विविध आयामों पर चर्चा हुई। पहले सत्र में स्वास्थ्य सूचना विज्ञान, सार्वजनिक स्वास्थ्य और आयुर्वेद विषय पर मुख्य वक्ता रिसर्च एंड इनफारमेशन सिस्टम फार डेवलपिंग नेशन, नई दिल्ली के कंसल्टेंट डा. सरीन एनएस रहे। उन्होंने आयुष ग्रिड के बारे में बताया जिसकी शुरुआत सीसीआईआरएस द्वारा की गई है। जिसमें आयुष डाटा को भी सम्मिलित किया गया है। फिर उन्होंने नमस्ते पोर्टल के बारे में बताया जिसमें 2888 आयुर्वेद कोड हैं। जिससे व्यक्ति के विभिन्न व्याधियों को आयुर्वेद के अनुसार पता किया जा सकता है। सत्र की अध्यक्षता डा किरण कुमार रेड्डी एवं डा शांतिभूषण हांडूर ने की।

समाचार दर्पण

जीवनशैली जनित विकार से अन्य विकारों के भी होने की आशंका अधिक : प्रो. कुशवाहा

सत्य संगम संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में आयुर्वेद से परिभाषित जीवन शैली पर केंद्रित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'हितायु-2024' के दूसरे दिन के प्रारंभिक वैज्ञानिक सत्र में बतौर मुख्य वक्ता श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्रिंसिपल प्रो.. अरविंद कुशवाहा ने जीवनशैली विकारों में एकीकृत स्वास्थ्य देखभाल विषय पर व्याख्यान दिया।

प्रो.. कुशवाहा ने कहा कि यदि हमारे शरीर मे पहले ही कोई जीवनशैली विकार है तो हमें और दूसरे विकार होने की भी आशंका बढ़ जाती है। इसके लिए हमें खानपान और जीवनशैली सुधार पर ध्यान देना होगा। उन्होंने कहा कि भारत में हर्बल संपदा का खजाना है जिसका उपयोग हम विभिन्न रोगों से बचाव में कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि आहार का सबसे अच्छा और बड़ा स्रोत पौध आधारित आहार ही है। दुनिया भर में 1990 से अबतक वयस्कों में मोटापा दोगुना और किशोरों में चौगुना बढ़ा है। उन्होंने बीमारियों से बचाव और निदान के लिए जीवनशैली में बदलाव लाने और एकीकृत चिकित्सा प्रणाली अपनाने पर जोर दिया। इस सत्र की अध्यक्षता गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के प्रिंसिपल प्रो. गिरिधर वेदांतम ने की। दूसरे दिन के दूसरे वैज्ञानिक सत्र में बीआरडी मेडिकल कॉलेज के मेडिसिन विभाग के प्रोफेसर डॉ. राजकिशोर सिंह ने मधुमेह और उससे जुड़ी जटिलताओं पर जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आज भी पचास प्रतिशत लोगों को पता ही नहीं है कि उन्हें मधुमेह का रोग है। जब दूसरी बीमारियों के लिए रक्त की जांच कराई जाती है तो पता चलता है कि रोगी का मधुमेह स्तर बढ़ा हुआ।

उन्होंने कहा कि मधुमेह से बचने के लिए जीवनशैली में बदलाव करना ही होगा। संतुलित आहार के साथ योग, नींद प्रबंधन, वजन प्रबंधन भी जरूरी है। राष्ट्रीय संगोष्ठी के एक अन्य सत्र में मुख्य वक्ता विश्व आयुर्वेद मिशन के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. जीएस तोमर ने आयुर्वेद में मधुमेह प्रबंधन विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि हमें जठराग्नि का ध्यान रखते हुए ही भोजन करना चाहिए।

खान-पान व जीवनशैली में सुधार पर देना होगा ध्यान

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के गुरु गोरखनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज में 'हितायु-2024' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई। दूसरे दिन सोमवार को संगोष्ठी का विषय था- जीवनशैली विकारों में एकीकृत स्वास्थ्य देखभाल रखा गया था। मुख्य वक्ता श्रीगोरक्षनाथ मेडिकल कालेज हास्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य प्रो. अरविंद कुशवाहा ने खान-पान व जीवनशैली में सुधार पर बल दिया।

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज में संगोष्ठी को संबोधित करते डा. राज किशोर सिंह ● सौ. कालेज

प्रो. कुशवाहा ने कहा कि यदि हमारे शरीर में पहले से ही कोई जीवनशैली विकार है तो हमें और दूसरे विकार होने की भी आशंका बढ़ जाती है। भारत में हर्बल संपदा का खजाना है, जिसका उपयोग हम विभिन्न रोगों से बचाव में कर सकते हैं।

दूसरे सत्र में बीआरडी मेडिकल कालेज के मेडिसिन विभाग के प्रोफेसर डा. राजकिशोर सिंह ने मधुमेह और उससे जुड़ी जटिलताओं की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आज भी 50 प्रतिशत लोगों को पता ही नहीं है कि उन्हें मधुमेह है। जब दूसरी बीमारियों के लिए रक्त की जांच कराई जाती है तो पता चलता है कि रोगी का मधुमेह स्तर बढ़ा हुआ। मधुमेह से बचने के लिए जीवनशैली में बदलाव करना होगा। संतुलित आहार के साथ योग, नींद प्रबंधन व वजन प्रबंधन बहुत जरूरी है। अन्य सत्र में विश्व आयुर्वेद मिशन के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. जीएस तोमर ने आयुर्वेद के अनुसार मधुमेह प्रबंधन के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि हमें जठराग्नि का ध्यान रखते हुए ही भोजन करना चाहिए। हमारा आहार ही कई बीमारियों को उत्पन्न करता है। अलग-अलग सत्रों में डा. रश्मि पुष्पन, डा. नवीन कोडलेडी ने वक्ताओं को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। विज्ञप्ति

तनावमुक्त जीवन ही मधुमेह नियंत्रण का मूल मंत्र : प्रो. जीएस तोमर

☐ निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर में विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष ने दिया मरीजों को परामर्श

स्वतंत्र चेतना गोरखपुर। विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष प्रो. जीएस तोमर ने कहा कि वैश्विक परिदृश्य में मधुमेह रोगियों की निरन्तर बढ़ती हुई संख्या गम्भीर चिन्ता का विषय है । भारत में भी इन रोगियों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि देखने को मिल रही है। इसका मूल कारण हमारी जीवनशैली में हो रहा बदलाव और तनाव है। ऐसे में मधुमेह से बचने का मूलमंत्र है कि हम तनावमुक्त जीवनशैली अपनाएं।

प्रो. तोमर गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) से संबद्ध अस्पताल में आयोजित निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर में मरीजों की जांच के बाद उन्हें परामर्श दे रहे थे।

शिविर में उन्होंने 165 मरीजों की जांच की। उन्होंने बताया कि आज स्थिति इतनी भयावह है कि हर घर में कोई न कोई मधुमेह रोग से पीड़ित है। मधुमेह से पीड़ित व्यक्ति ही नहीं, प्रायः चिकित्सकों का ध्यान भी रक्त शर्करा के नियंत्रण पर ही केन्द्रित रहता है । जबकि आवश्यकता इस बात की है कि उसकी आँख, हृदय, किडनी तथा नाड़ियों जैसे महत्वपूर्ण अंगों को मधुमेह के घातक उपद्रवों से बचाया जा सके।

उन्होंने कहा कि मधुमेह की चिकित्सा में आयुर्वेदीय औषधियाँ एक तरफ जहाँ इंसुलिन के स्राव को बढ़ाती हैं, वहीं दूसरी ओर ये इंसुलिन के विरुद्ध बन रही एण्टीबॉडीज को रोक कर इंसुलिन की सक्रियता को बढ़ाकर इसे प्रभावी भी बनाती हैं। उन्होंने बताया कि प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में उठना, कम से कम 45 मिनट नियमित टहलना और योगासन डायबिटीज रोगियों के लिए अमृततुल्य फलदायी है। कच्ची हल्दी का 5 ग्राम चूर्ण 40 एमएल आँवला रस में मिलाकर प्रात:काल नाश्ता के तुरन्त पहले या बाद में लेना मधुमेह में अत्यन्त लाभकारी है। खान पान में मोटे अनाज विशेषकर जौ, चना, बाजरा, ज्वार, मक्का, रागी, सांवा, कोदों के साथ काला गेहूँ मिलाकर बनाई गई चपाती न केवल न्यूनतम ग्लाइसीमिक इण्डेक्स से युक्त है, अपितु अधिक रेशेदार (फाइब्रस) होने से मधुमेह नियंत्रण के साथ साथ हमारी आँतों (कोलन) को भी स्वस्थ रखती हैं। औषधियों में शुद्ध शिलाजीत एवं चन्द्रप्रभा वटी सर्व प्रयोज्य है। बसन्त कुसुमाकर रस, डायबकल्प प्लस एवं बीजीआर-34 जैसी प्रभावी औषधियाँ मात्रानुसार चिकित्सक के परामर्श से प्रयोग की जा सकती हैं।

राष्ट्रीय सेवायोजन के स्वयंसेवक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित हुआ।

रासेयो के स्वयंसेवकों ने चलाया स्वच्छता अभियान

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की पारिजात इकाई की ओर से विश्वविद्यालय परिसर से महुआतर बाजार तक के क्षेत्र में सफाई कर लोगों को जागरूक किया गया।

कार्यक्रम अधिकारी डॉ. आयुष कुमार पाठक के नेतृत्व में आयोजित अभियान में कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे, कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अखिलेश दुबे, उत्कर्ष सिंह, अमित राय, बदल पटेल, अंजलि तिवारी, शीलू कसौधन समेत बड़ी संख्या में स्वयंसेवक शामिल रहे। इसी क्रम में गुरु श्री गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस हॉस्पिटल में मरीजों एवं उनके परिजनों का सहयोग किया गया। यहां स्वयंसेवकों ने कार्यक्रम अधिकारी डॉ. अभिषेक कुमार सिंह के नेतृत्व में स्वच्छता अभियान चलाया।

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में आयुर्वेद पर केंद्रित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'हितायु' का दूसरा दिन

तनाव मुक्त जीवनशैली मधुमेह नियंत्रण का मूल मंत्र

बोले डॉ. तोमर

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में आयुर्वेद से परिभाषित जीवन शैली पर केंद्रित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी हितायु के दूसरे दिन सोमवार को मुख्य वक्ता विश्व आयुर्वेद मिशन के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. जीएस तोमर ने कहा कि तनाव मुक्त जीवन शैली अपनाकर मधुमेह को नियंत्रित किया जा सकता है। हमारा आहार ही कई बीमारियों का जनक है।

डॉ.तोमर ने बताया कि हमें जठराग्नि का ध्यान रखते हुए ही भोजन करना चाहिए। हमारा आहार ही कई बीमारियों को उत्पन्न करता है। प्रो. तोमर ने कहा कि मधुमेह को हम केवल नियंत्रित कर सकते हैं, हम इसे खत्म नहीं कर सकते हैं। आगे डायबिटीज मेलिटस के बचावों में उन्होंने बताया कि दोषरहित जीवनशैली से मधुमेह से बचा जा सकता है। मधुमेह के दुष्प्रभाव को बताते हुए उन्हें बताया कि कैसे हम पूर्व स्तर पर ही मधुमेह को पता कर सकते हैं। तनाव, गतिहीन स्थिति, कार्बोहाइड्रेट युक्त भोजन के अलावा आनुवांशिकी और कफ कारक तत्व भी मधुमेह के कारण हो सकते हैं।

हर घर में है एक मरीज : प्रो. जीएस तोमर ने बताया कि वैश्विक परिदृश्य में मधुमेह रोगियों की निरन्तर बढ़ती हुई संख्या गम्भीर चिन्ता का विषय है । भारत में भी इन रोगियों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि देखने को मिल रही है। इसका मूल कारण हमारी जीवनशैली में हो रहा बदलाव है । मधुमेह विकृत जीवनशैली जन्य रोगों की श्रेणी में प्रमुख है। आज स्थिति इतनी भयावह है कि हर घर में कोई न कोई मधुमेह रोग से पीड़ित है।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन सोमवार को डॉ. जीएस तोमर को सम्मानित किया गया।

जीवनशैली के विकार से हो सकती है दूसरी बीमारी : प्रारंभिक वैज्ञानिक सत्र में बतौर मुख्य वक्ता श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्रिंसिपल प्रो.. अरविंद कुशवाहा ने जीवनशैली विकारों में एकीकृत स्वास्थ्य देखभाल विषय पर व्याख्यान दिया। प्रो. कुशवाहा ने कहा कि यदि हमारे शरीर मे पहले ही कोई जीवनशैली विकार है तो हमें और दूसरे विकार होने की भी आशंका बढ़ जाती है। इसके लिए हमें खानपान और जीवनशैली सुधार पर ध्यान देना होगा। उन्होंने कहा कि भारत में हर्बल संपदा का खजाना है जिसका उपयोग हम विभिन्न रोगों से बचाव में कर सकते हैं।

उन्होंने बताया कि आहार का सबसे अच्छा और बड़ा स्रोत पौध आधारित आहार ही है। दुनिया भर में 1990 से अबतक वयस्कों में मोटापा दोगुना और किशोरों में चौगुना बढ़ा है। उन्होंने बीमारियों से बचाव और निदान के लिए जीवनशैली में बदलाव लाने और एकीकृत चिकित्सा प्रणाली अपनाने पर जोर दिया। इस सत्र की अध्यक्षता गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के प्रिंसिपल प्रो. गिरिधर वेदांतम ने की।

50% लोगों को पता ही नहीं कि वे मधुमेह की चपेट में

दूसरे दिन के दूसरे वैज्ञानिक सत्र में बीआरडी मेडिकल कॉलेज के मेडिसिन विभाग के प्रोफेसर डॉ. राजकिशोर सिंह ने मधुमेह और उससे जुड़ी जटिलताओं पर जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आज भी पचास प्रतिशत लोगों को पता ही नहीं है कि उन्हें मधुमेह का रोग है। जब दूसरी बीमारियों के लिए रक्त की जांच कराई जाती है तो पता चलता है कि रोगी का मधुमेह स्तर बढ़ा हुआ। उन्होंने कहा कि मधुमेह से बचने के लिए जीवनशैली में बदलाव करना ही होगा। सतुलित आहार के साथ योग, नींद प्रबंधन, वजन प्रबंधन भी जरूरी है। अलग अलग सत्रों में डॉ रश्मि पुष्पन, डॉ.नवीन कोडलेडी ने वक्ताओं को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

समाचार दर्पण

जीवनशैली जनित विकार से अन्य विकारों के भी होने की आशंका अधिक : प्रो. कुशवाहा

- गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में आयुर्वेद पर केंद्रित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी हितायु का दूसरा दिन
- पचास प्रतिशत लोगों को पता ही नहीं कि वे मधुमेह की चपेट में हैं : डॉ. राजकिशोर

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में आयुर्वेद से परिभाषित जीवन शैली पर केंद्रित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी हितायु- 2024 के दूसरे दिन के प्रारंभिक वैज्ञानिक सत्र में बतौर मुख्य वक्ता श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्रिंसिपल प्रो.. अरविंद कुशवाहा ने जीवनशैली विकारों में एकीकृत स्वास्थ्य देखभाल विषय पर व्याख्यान दिया।

प्रो कुशवाहा ने कहा कि यदि हमारे शरीर में पहले ही कोई जीवनशैली विकार है तो हममें और दूसरे विकार होने की आशंका बढ़ जाती है। इसके लिए हमें खानपान और जीवनशैली सुधार पर ध्यान देना होगा।

उन्होंने कहा कि भारत में हर्बल संपदा का खजाना है जिसका

उपयोग हम विभिन्न रोगों से बचाव में कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि आहार का सबसे अच्छा और बड़ा स्रोत पौध आधारित आहार ही है। दुनिया भर में 1990 से अबतक वयस्कों में मोटापा दोगुना और किशोरों में चौगुना बढ़ा है।

उन्होंने बीमारियों से बचाव और निदान के लिए जीवनशैली में बदलाव लाने और एकीकृत चिकित्सा प्रणाली अपनाने पर जोर दिया।

इस सत्र की अध्यक्षता गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के प्रिंसिपल प्रो. गिरिधर वेदांतम ने की। दूसरे दिन के दूसरे वैज्ञानिक सत्र में बीआरडी मेडिकल कॉलेज के मेडिसिन विभाग के प्रोफेसर डॉ. राजकिशोर सिंह ने मधुमेह और उससे जुड़ी जटिलताओं पर जानकारी देते हुए कहा कि आज भी पचास प्रतिशत लोगों को पता ही नहीं है कि उन्हें मधुमेह का रोग है। जब दूसरी बीमारियों के लिए रक्त की जांच कराई जाती है तो पता चलता है कि रोगी का मधुमेह स्तर बढ़ा हुआ।

उन्होंने कहा कि मधुमेह से बचने के लिए जीवनशैली में बदलाव करना ही होगा। संतुलित आहार के साथ योग, नींद प्रबंधन, वजन प्रबंधन भी जरूरी है।

स्त्री स्वास्थ्य में आयुर्वेद की भूमिका पर चर्चा

गोरखपुर : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेस में 'हितायु-2024' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित है। अंतिम दिन मंगलवार को संगोठी का विषय था- स्त्री स्वास्थ्य प्रबंधन में आयुर्वेद की भूमिका।

मुख्य वक्ता नेशनल इंस्टीट्यूट आफ आयुर्वेद, जयपुर में स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग की प्रोफेसर डा.भारती कुमारमंगलम ने कहा कि आयुर्वेद लिंग आधारित स्वास्थ्य देखभाल पर भी विचार करता है। अष्टांग आयुर्वेद की कौमारभृत्य शाखा में इसका स्पष्ट उल्लेख मिलता है।

गसंगोष्ठी को संबोधित करतीं डा. भारती कुमार मंगलम ● सौ. कालेज

डा.कुमारमंगलम ने कहा कि महिलाओं में रजस्राव एक शोधन (प्राकृतिक रक्तमोक्षण) की तरह है। यह एंडोमेट्रियम स्तर पर अग्नि को पुनर्स्थापित करता है। स्त्री स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद में वर्णित रजस्वलाचर्या के नियमों का पालन जरूरी है। कुलपति मेजर जनरल डा.अतुल वाजपेयी ने मुख्य वक्ता को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। विज्ञप्ति।

लिंग आधारित स्वास्थ्य देखभाल पर भी विचार करता है आयुर्वेद -डॉ. भारती

गोरखपुर, 29 अक्टूबर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में आयुर्वेद से परिभाषित जीवन शैली पर केंद्रित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'हितायु-2024' के समापन समारोह में नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ आयुर्वेद, जयपुर में स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग की प्रोफेसर डॉ. भारती कुमारमंगलम ने स्त्री स्वास्थ्य प्रबंधन में आयुर्वेद की भूमिका विषय पर व्याख्यान दिया।

डॉ. भारती ने कहा कि आयुर्वेद लिंग आधारित स्वास्थ्य देखभाल पर भी विचार करता है।अष्टांग आयुर्वेद की कौमारभृत्य शाखा में इसका स्पष्ट उल्लेख मिलता है। आयुर्वेद और महिला स्वास्थ्य के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा की महिलाओं में रजस्राव एक शोधन (प्राकृतिक रक्तमोक्षण) की तरह है। यह एंडोमेट्रियम स्तर पर अग्नि को पुनर्स्थापित करता है। उन्होंने कहा कि स्त्री स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद में वर्णित रजस्वलाचर्या के नियमों का पालन जरूरी है। यह एक मिश्रित औषधि है जिसे अष्टांगहृदय में वर्णित लेह रूप में तैयार किया गया था। समापन समारोह में मुख्य वक्ता को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। आभार ज्ञापन डॉ. मिनी के.वी. ने किया।

'हितायु-2024' के समापन समारोह के साथ गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में विश्व आयुर्वेद दिवस भी मनाया गया। इस अवसर पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी, आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य प्रो. गिरिधर वेदांतम ने आयुर्वेद की महत्ता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर प्रमुख रूप से डॉ. अरविंद कुशवाहा, डॉ. राजेश बघेल, डॉ. रश्मि पुष्पन, डॉ. नवीन कोडलेडी आदि की सहभागिता रही।

❖गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में आयुर्वेद पर केंद्रित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'हितायु' का समापन

लिंग आधारित स्वास्थ्य देखभाल पर भी विचार करता है आयुर्वेद : डॉ. भारती

गोरखपुर, कार्यालय संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में आयुर्वेद से परिभाषित जीवन शैली पर केंद्रित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'हितायु-2024' का समापन मंगलवार को हुआ। समापन समारोह में नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ आयुर्वेद, जयपुर की स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग की प्रो. डॉ. भारती कुमार मंगलम ने स्त्री स्वास्थ्य प्रबंधन में आयुर्वेद की भूमिका विषय पर व्याख्यान दिया। डॉ. भारती ने कहा कि आयुर्वेद लिंग आधारित स्वास्थ्य देखभाल पर भी विचार करता है।

अष्टांग आयुर्वेद की कौमारभृत्य शाखा में इसका स्पष्ट उल्लेख मिलता है। आयुर्वेद और महिला स्वास्थ्य के बारे में कहा की महिलाओं में रजस्राव एक शोधन (प्राकृतिक रक्तमोक्षण) की तरह है। यह एंडोमेट्रियम स्तर पर अग्नि को पुनर्स्थापित करता है। कहा कि स्त्री स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद में वर्णित रजस्वलाचर्या के नियमों का पालन जरुरी है। इससे कार्यक्षमता पुनर्संगठित होती है। उन्होंने संतानोत्पत्ति से जुड़ी समस्याओं पर भी चर्चा की और अध्ययन निष्कर्षों के आधार पर बताया कि स्त्री वंध्यता में सुकुमार रसायण की काफी प्रभावकारिता है। यह एक मिश्रित औषधि है जिसे अष्टांगहृदय में वर्णित लेह रूप में तैयार किया गया था। समापन समारोह में मुख्य वक्ता को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। आभार ज्ञापन डॉ. मिनी केवी ने किया।

समापन समारोह के साथ मनाया गया आयुर्वेद दिवस

'हितायु-2024' के समापन समारोह के साथ गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में विश्व आयुर्वेद दिवस भी मनाया गया। इस मौके पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी, आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य प्रो. गिरिधर वेदांतम ने आयुर्वेद की महता पर प्रकाश डाला। इस मौके पर प्रमुख रूप से डॉ. अरविंद कुशवाहा, डॉ. राजेश बघेल, डॉ. रश्मि पुष्पन, डॉ. नवीन कोडलेडी आदि मौजूद रहीं।

लिंग आधारित स्वास्थ्य देखभाल पर भी विचार करता है आयुर्वेद' : डॉ. भारती'

'गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में आयुर्वेद पर केंद्रित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'हितायु' का समापन'

संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिटयूट ऑफ मेडिकल साइंसेज मे आयुर्वेद से परिभाषित जीवन शैली पर केंद्रित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'हितायु-2024' के समापन समारोह में नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ आयुर्वेद, जयपुर में स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग की प्रोफेसर डॉ. भारती कुमारमंगलम ने स्त्री स्वास्थ्य प्रबंधन में आयुर्वेद की भूमिका विषय पर व्याख्यान दिया। डॉ. भारती ने कहा कि आयुर्वेद लिंग आधारित स्वास्थ्य देखभाल पर भी विचार करता है। अष्टांग आयुर्वेद की कौमारभृत्य शाखा में इसका स्पष्ट उल्लेख मिलता है। आयुर्वेद और महिला स्वास्थ्य के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा की महिलाओं में रजस्राव एक शोधन (प्राकृतिक रक्तमोक्षण) की तरह है। यह एंडोमेट्रियम स्तर पर अग्नि को पुनर्स्थापित करता है। उन्होंने कहा कि स्त्री स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद में वर्णित रजस्वलाचर्या के नियमों का पालन जरूरी है। इससे कार्यक्षमता पुनर्संगठित होती है। उन्होंने संतानोत्पत्ति से

जुड़ी समस्याओं पर भी चर्चा की और अध्ययन निष्कर्षों के आधार पर बताया कि स्त्री वंध्यता में सुकुमार रसायण की काफीप्रभावकारिता है। यह एक मिश्रित औषधि है जिसे अष्टांगहृदय में वर्णित लेह रूप में तैयार किया गया था। समापन समारोह में मुख्य वक्ता को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। आभार ज्ञापन डॉ. मिनी के.वी. ने किया।

समापन समारोह के साथ मनाया गया आयुर्वेद दिवस: हितायु-2024' के समापन समारोह के साथ गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में विश्व आयुर्वेद दिवस भी मनाया गया। इस अवसर पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी, आयुर्वेद कॉलेज के आचार्य प्रो. गिरिधर वेदांतम ने आयुर्वेद की महत्ता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर प्रमुख रूप से डॉ. अरविंद कुशवाहा, डॉ. राजेश बघेल, डॉ. रश्मि पुष्पन, डॉ. नवीन कोडलेडी आदि की सहभागिता रही।

लिंग आधारित स्वास्थ्य देखभाल पर भी विचार करता है आयुर्वेद : डॉ. भारती

गोरखपुर(संवाददाता)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में आयुर्वेद से परिभाषित जीवन शैली पर केंद्रित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'हितायु-2024' के समापन समारोह में नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ आयुर्वेद, जयपुर में स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग की प्रोफेसर डॉ. भारती कुमारमंगलम ने स्त्री स्वास्थ्य प्रबंधन में आयुर्वेद की भूमिका विषय पर व्याख्यान दिया।

डॉ. भारती ने कहा कि आयुर्वेद लिंग आधारित स्वास्थ्य देखभाल पर भी विचार करता है।

अष्टांग आयुर्वेद की कौमारभृत्य शाखा में इसका स्पष्ट उल्लेख मिलता है। आयुर्वेद और महिला स्वास्थ्य के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा की महिलाओं में रजस्राव एक शोधन (प्राकृतिक रक्तमोक्षण) की तरह है। यह एंडोमेट्रियम स्तर पर अग्नि को पुनर्स्थापित करता है। उन्होंने कहा कि स्त्री स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद में वर्णित रजस्वलाचर्या के नियमों का पालन जरूरी है। इससे कार्यक्षमता पुनर्संगठित होती है। उन्होंने संतानोत्पत्ति से जुड़ी समस्याओं पर भी चर्चा की और अध्ययन निष्कर्षों के आधार पर बताया कि स्त्री वंध्यता में सुकुमार रसायण की काफीप्रभावकारिता है। यह एक मिश्रित औषधि है जिसे अष्टांगहृदय मे वर्णित लेह रूप मे तैयार किया गया था। समापन समारोह में मुख्य वक्ता को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। आभार ज्ञापन डॉ. मिनी के.वी. ने किया।समापन समारोह के साथ मनाया गया आयुर्वेद दिवस'हितायु-2024' के समापन समारोह के साथ गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में विश्व आयुर्वेद दिवस भी मनाया गया। इस अवसर पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी, आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य प्रो. गिरिधर वेदांतम ने आयुर्वेद की महत्ता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर प्रमुख रूप से डॉ. अरविंद कुशवाहा, डॉ. राजेश बघेल, डॉ. रश्मि पुष्पन, डॉ. नवीन कोडलेडी आदि

निर्माणाधीन परिसर

01 निमार्णाधीन क्रीड़ांगन

02 निर्माणाधीन फार्मेसी संकाय

03 निर्माणाधीन प्रेक्षागृह

04 निर्माणाधीन शिक्षक आवास

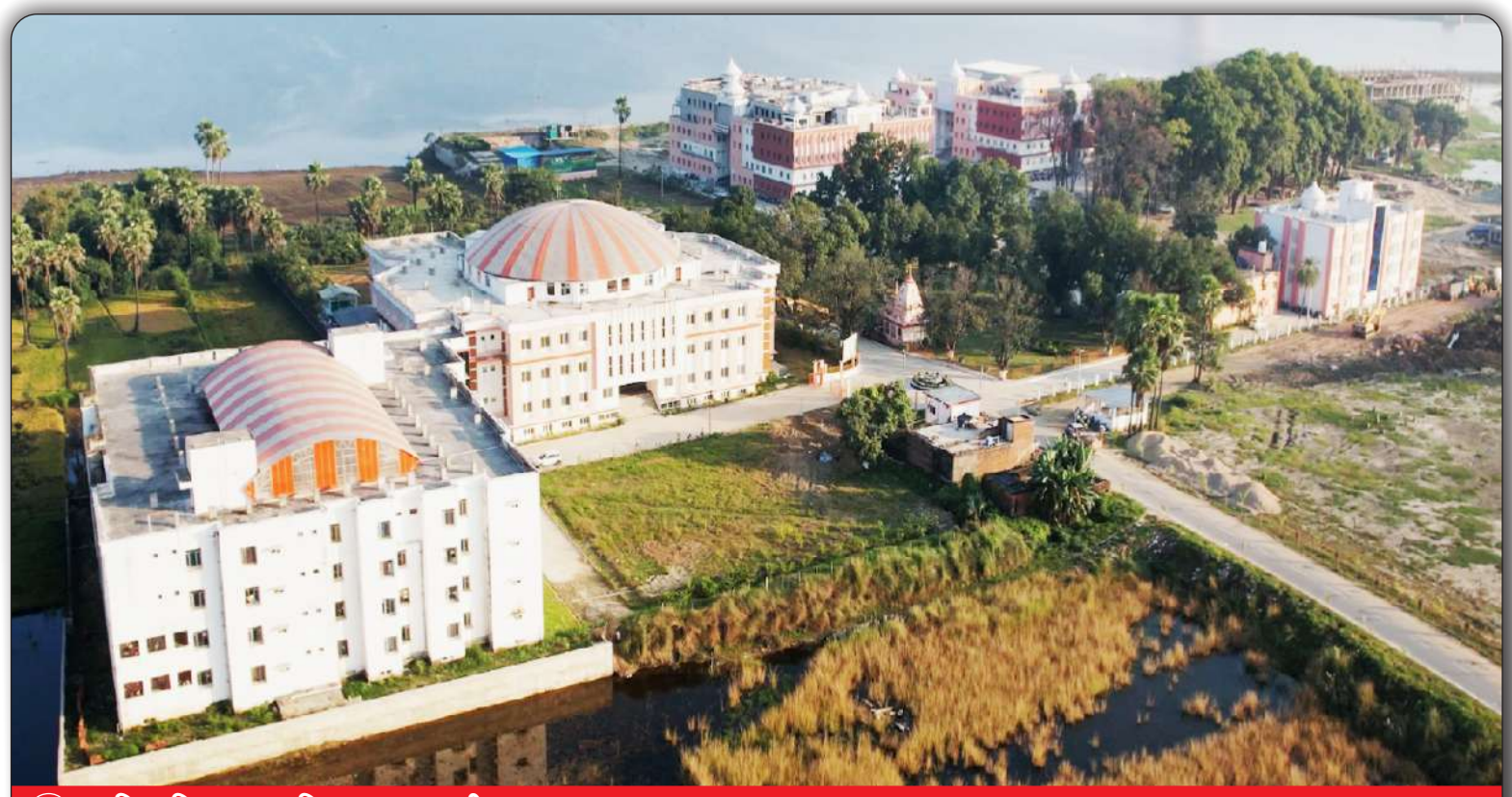

05 विश्वविद्यालय परिसर का वायवीय दृश्य

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

01 डॉ. सरीन एन.एस.

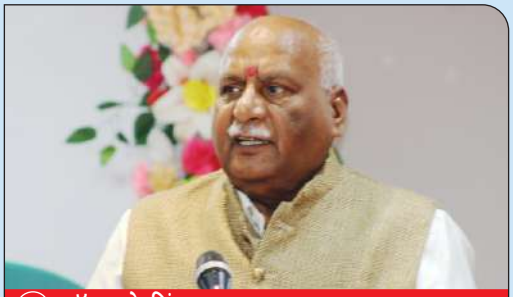
02 डॉ. ए. के. सिंह

03 डॉ. अरविंद कुशवाहा

04 मेजर जनरल (डॉ.) अतुल वाजपेई

05 डॉ. जी. एस. तोमर

06 डॉ. गौरव राज द्विवेदी

07 डॉ. राजकिशोर सिंह

08 डॉ. भारती कुमारमंगलम

09 शोध प्रस्तुत करती शोधार्थी

10 काशी हिंदू विश्वविद्यालय में कृषि संकाय के विद्यार्थियों द्वारा शैक्षणिक भ्रमण

11 आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य एवं प्राध्यापकगण

प्रधान सम्पादक
डॉ. विमल कुमार दूबे

सम्पादक
आचार्य साध्वीनन्दन पाण्डेय

संपादक मण्डल
श्री रोहित श्रीवास्तव, डॉ. प्रज्ञा सिंह, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. कुलदीप सिंह एवं सुश्री स्वेता अल्बर्ट

ग्राफिक्स डिजाइनर: श्री शारदानन्द पाण्डेय

+91-9415266014, +91-9935904499, +91-9794299451
Arogya Dham, Balapar Road, Sonbarsa, Gorakhpur
mguniversitygkp@mgug.ac.in https://www.mgug.ac.in/